OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -22 अंक -3 मई-I-2020 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

104 वर्षीय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की प्रमुख

अध्यात्म की धरोहर का अमर सफर

शान्तिवन। आजादी के तुरन्त बाद जाति-प्रथा सहित अनेक बन्धनों को तोड़कर दादी जानकी ने अपनी यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ा। सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध न कर स्वयं को ही आत्मसंयमित कर दादी ने अपने कदम आगे बढ़ाये। बात करने से पता चलता है कि दादी के मन में बचपन से ही दूसरों के जीवन को सुखी बनाने की प्रेरणा आती रहती थी। आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक चरण में आप शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहीं, फिर भी आपने इस पथ पर अपनी भूमिका को परमात्मा की श्रीमत के आधार से बखूबी निभाया। ऐसे जहां में जान डालने वाली, सबके दिलों में 'मैं कौन' (आत्मा), 'मेरा कौन'(परमात्मा) का पाठ पढ़ाने वाली, निरन्तर दिलाराम शिव को अपने दिल में जगह देने वाली आज हम सबसे विदाई लेकर अपने मीत से मिल गईं। जिसकी प्रारम्भिक समय से ही दिल की आश थी।

- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा के स्पीकर ने किया श्रद्धासुमन अर्पित
- स्वच्छता की ब्रांड एम्बेसडर दादी जानकी को भावभीनी श्रद्धांजलि
- "मोस्ट स्टेबल माइंड इन द वर्ल्ड" की विदाई

महिलाओं द्वारा संचालित दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका तथा स्वच्छ भारत मिशन ब्रांड एम्बेसडर राजयोगिनी दादी जानकी ने अपनी 104 वर्ष की उम्र पूरी कर माउण्ट आबू के ग्लोबल हॉस्पिटल में 27 मार्च, प्रातः 2 बजे अंतिम सांस ली। उन्हें पिछले दो महीने से श्वास तथा पेट की तकलीफ थी, जिसका इलाज चल रहा था। उनका अंतिम संस्कार ब्रह्माकुमारीज़ के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन के सम्मेलन सभागार के सामने ग्राउण्ड में किया गया। पूरी दुनिया में मानवता और नारी शक्ति का संदेश देने वाली राजयोगिनी दादी जानकी के देहावसान पर देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए ट्वीट किया कि अध्यात्म, समाज कल्याण और विशेष रुप से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनका योगदान अमूल्य रहा है।

वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि दूसरों का जीवन बदलने में तथा नारी शक्ति के आध्यात्मिक सशक्तिकरण में उनका अमूल्य योगदान रहा है।

श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए संस्थान के वरिष्ठ भाई-बहनें ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. बृजमोहन, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी दीदी, ब्र.कु. हंसा दीदी, ब्र.कु. भुपाल।

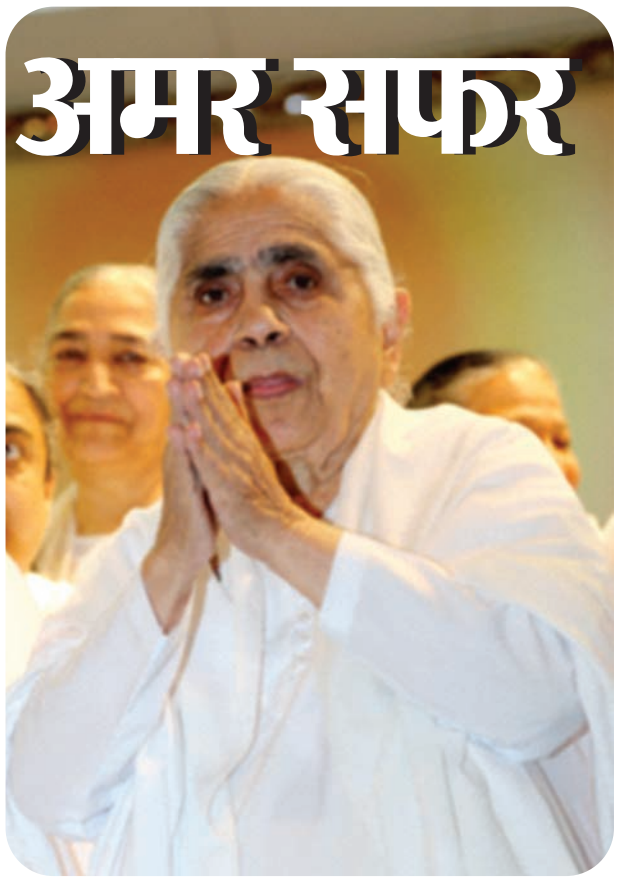

नारी शक्ति की प्रेरणा स्रोत राजयोगिनी दादी जानकी का जन्म 1 जनवरी, 1916 को हैदराबाद सिंध,पाकिस्तान में हुआ था। उन्होंने 21 वर्ष की उम्र में ही ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के आध्यात्मिक पथ को अपना कर अपने जीवन को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया था। आध्यात्मिक उड़ान में शिखर छू चुकी राजयोगिनी दादी जानकी मात्र चौथी क्लास तक ही पढ़ी थीं। लेकिन आध्यात्मिक आभा से भरपूर भारतीय दर्शन, राजयोग और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए 1970 में पश्चिमी देशों की ओर रुख किया। दुनिया के 140 देशों में मानवीय मूल्यों के बीजारोपण के हज़ारों सेवाकेन्द्रों की स्थापना कर लाखों लोगों को एक नयी ज़िंदगी दी।

राजयोगिनी दादी जानकी ने पूरे विश्व में मन, आत्मा की स्वच्छता के साथ बाहरी स्वच्छता के लिए अनोखा कार्य किया। जिसके लिए भारत सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एम्बेसडर बनाया था। दादी जानकी के देहावसान की खबर सुनते ही देश-विदेश की संस्था के अनुयायियों ने भावभीनी के लिए योग साधना प्रारम्भ कर दी है। उनके पार्थिव शरीर को माउण्ट आबू से आबू रोड के शांतिवन लाया गया तथा दोपहर 12 बजे उनका अंतिम संस्कार किया गया।

दादी जानकी से आशीर्वाद लेते हुए भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी।

महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद व प्रथम महिला दादी जानकी के साथ मुलाकात करते हुए।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 2

तीन बारी ओम शांति बोलने से...

लाइट, माइट और एवरीथींग राइट

दादी जानकी का नाम स्मृति पटल पर आते ही दादी माना ज्ञान की देवी, पवित्रता की मूर्त, उनके अथॉरिटी के बोल, परमात्मा(बाबा) पर अटूट निश्चय और स्नेहमयी सम्बन्ध निभाने वाली। उसके सामने जो कोई भी जाता तो ज्ञान, योग, अनुशासन व शक्ति की महक बिना लिए वापिस नहीं लौटता। वो बाबा का प्यार सबको लुटाती थीं। हमने दादी को 1985 से देखा है। वे ईश्वरीय सेवाओं के लिए विदेशों का, मुख्यालय लंदन में रहकर विश्व भर में प्यार व परमात्म संदेश देने के लिए सेवारत थीं। ना सिर्फ संदेश किन्तु हमारा बाबा कौन है, कैसा है, उसका अनुभव भी कराती थीं। वे हमेशा कहती थीं कि बाबा को कम्बाइंड रख सेवा करो। हमेशा स्मृति में रखो कि करनकरावनहार करा रहा है और हमारा भाग्य बना रहा है।

- ब्र. कु. गंगाधर

उसका प्रैक्टिकल में दूसरों को साक्षात्कार कराने में दादी को महारथ हासिल थी।

2007 में दादी जानकी मुख्य प्रशासिका बनीं। वे यज्ञ के सभी डिपार्टमेंट वालों से मिलती थीं और परिचय लेती थीं कि कौन कहाँ-कहाँ, क्या-क्या सेवा कर रहे हैं उनके बारे में बारीकी से जानकारी लेती थीं। यज्ञ कारोबार के निमित्त हमारा बार-बार दादी से मिलना होता था। और मैं हर ओम शांति मीडिया का इश्यू दादी को दिखाता था। दादी बड़े प्यार से देखती और एक-एक प्रकाशित लेख को व समाचारों को बड़े ध्यान से पढ़ती थीं और पूछती थीं कि ये सारा आप बनवाते हैं? मैं कहता था कि बाबा की कमाल है। दादी हर पेज पढ़ती और उसमें छपा रंगीन पृष्ठ सजा और क्लीयर लिखित देखकर दादी पूछती थीं कि ये सारे देश-विदेश में जाता है? फिर हमने कहा हाँ दादी लाखों की संख्या में जाता है। कहने का मतलब है कि दादी हर चीज़ की जानकारी रखती थीं। और दिल से दुआयें देती थीं।

हमने सभी मुधबन वासी के संग दादी का सौवां बर्थडे ओमशांति मीडिया कार्यालय में मनाने का निर्णय लिया। और जब ये निमंत्रण दादी के पास लेकर गया तो दादी ने तुरंत अपनी निजी सचिव ब्र.कु. हंसा बहन को कहा कि मुझे ओमशांति मीडिया कार्यालय में जाना है इसका प्रोग्राम बनाओ। और दादी की स्वीकृति मिलने के पश्चात् हमने पूरे कार्यालय को खूब सजाया। दादी के साथ वर्तमान समय नवनियुक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी भी साथ में आईं। दोनों दादियां करीब 3 घंटे कार्यालय में रहीं। दोनों दादियां कार्यालय में पहुँचते ही एक-एक चैम्बर में गईं और कौन कहाँ बैठता है, उनकी क्या सेवा है, उसको बारीकी से दादी ने देखा भी और परिचय भी लिया। तत्पश्चात कार्यालय के हॉल में दादी ने अपने सम्बोधन में कहा कि कमाल है ओमशांति मीडिया वालों की। दादी हमेशा कहती थीं तीन बारी ओम शांति बोलकर ही कोई कार्य आरम्भ करो। दादी ने तीन बारी ओमशांति बोलने का अर्थ का मर्म समझाते हुए कहा कि पहली बार ओम शांति बोलने से लाइट हो जाते हैं, दूसरी बारी ओम शांति बोलने से माइट आ जाती है और तीसरी बारी ओम शांति बोलने से एवरीथींग राइट हो जाता है।

हमने देखा दादी की स्मरण शक्ति भी बहुत पॉवरफुल थी। जैसे ही दादी जानकी ओमशांति मीडिया कार्यालय में पहुँची तो जब मैंने फूलों के गुलदस्ते से स्वागत किया, तो दादी ने कहा ये तो टोली (प्रसाद) वाला भाई है। तो ये बात 1985 की है जब मैं पाडंव भवन में टोली डिर्पाटमेंट में सेवा करता था और दादियों से बारम्बार मिलना होता था तो तब मैंने देखा कि आज भी दादी के मानस पटल पर तरोताजा अंकित था।

दादी के लिए अगर थोड़े शब्दों में कहें तो दादी एकॉनामी, एकनामी और एक्युरेट की स्वरूप थीं। बाबा की एक पाई भी व्यर्थ ना जाये, खर्च भी कम हो और काम भी एक्युरेट हो, समय की भी बचत हो और फास्ट सेवा हो। मेरा बाबा कौन है, उसका फास्ट संदेश सारे विश्व को मिल जाये ये उसके मन में अविरत धुन बजती रहती थी। दादी जनक देही से विदेही बन गईं। विदेही बन विश्व परिवर्तन के कार्य में तीव्र गति प्रदान करने हेतु अव्यक्तारोहण बनीं। दादी को हमारा शत-शत नमन और श्रद्धासुमन अर्पित है।

शांतिवन। ओमशांति मीडिया कार्यालय में दादी जानकी का सौंवा बर्थडे मनाया गया। जिसमें दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी व नेपाल की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ओमशांति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर व ब्र.कु. गोविंद,ज्ञान सरोवर।

कैसी भी बात आये पर खुशी ना जाये

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा की याद में बैठ, बाबा द्वारा ही चेक करायें कि मैं ठीक हूँ या नहीं और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं।

कोई भी बात होती है, भले हिलाने वाली बातें आती हैं, बहुत कुछ लेन-देन भी चलती है लेकिन कोई भी परिस्थिति में मेरी अवस्था उस हलचल में हिले नहीं। अपनी मौज को न छोड़ें। सदा कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी रहूँ। कोई भी बात मुझे टच न करे, ऐसा हो सकता है? न्यारे और प्यारे रहना है। बाबा की मुरलियों में भी भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रहने के लिए मिलती रहती हैं और संगठन में तो उसमें अटेन्शन तो रखना ही पड़ता है, भले साधारण हैं लेकिन चलेंगे तो सही, बोलेंगे तो सही ना। उसमें चेक करें कि मैं मर्यादापूर्वक हूँ, चलते-चलते सारा समय ठीक रहता हूँ? या कोई न कोई बात बीच में आ जाती है? ठीक चलते-चलते भी कभी बीच में आ जाती है तो उसकी जजमेन्ट के लिए चाहिए सचमुच योगयुक्त आत्मा। बाबा की याद में बैठ, बाबा द्वारा ही चेक करायें कि मैं ठीक हूँ या नहीं और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं। भले पहले नहीं पता पड़ता है लेकिन चलते-चलते फिर मन में आ जाता है, सही बात भी आती है, वो कैच करें बस। ऐसे नहीं बात को भी चला लेवें। कर लेंगे, मेरी बुद्धि में स्पष्टीकरण तो है कि यह करना है लेकिन करने की हिम्मत कम है। जब करना ही है तो करना ही है, फिर उनको हल्का नहीं छोड़ें। किसी की भी मदद चाहिए तो ले सकते हैं। जो भी ऐसा हो जो राय देवे और उस पर चलने से फर्क हो। तो कोई भाई-बहनों से भी राय ले सकते हैं, थोड़ा वेरीफाई करना चाहिए। और खुशी कभी नहीं गंवायें, बातें तो आयेंगी। अगर अन्दर सन्तुष्टता हो कि मैं ठीक हूँ, तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर चलते-चलते रूक जाते हैं और खुशी कम हो जाती है तो ज़रूर चेक करना चाहिए। खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है। खुशी नहीं होगी तो कई बीमारियाँ आ जाती हैं फिर संगठन का बन्धन भी है। आप चाहो आज यह नहीं करूँ, आपको करना ही पड़ता है। उसे खुशी से करें, मजबूरी से नहीं।

सर्व की बुद्धि को परिवर्तन करने का साधन-साइलेन्स

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

जब समय अनुसार साइंस इतनी प्रगति कर रही है, चाहे विनाश के लिए, चाहे नई दुनिया के लिए नई-नई खोज कर रही है फिर भी वह तो चांद और तारों तक ही जा पाते और हमें तो जाना है सूर्य, चांद से भी पार।

जहाँ मेरा नहीं, सब तेरा-तेरा है, तो कोई चिन्ता करने की बात ही नहीं है। बाबा ने सब चिन्ताओं से मुक्त कर दिया, सब दुःख दूर किया है, तू मिला सबकुछ मिला बाकी क्या इच्छा करूँ। जिसको जो भी ड्रामा अनुसार प्रवृत्ति मिली है उनको प्यार से निभाओ। सबसे पहली प्रवृत्ति तो इस देह की कर्मेन्द्रियों की ही है। आत्मा तो कर्मेन्द्रियों का राजा है ना, तो ऑर्डर से अपनी कर्मेन्द्रियों रूपी प्रवृत्ति को चलाओ, ऐसी योग की शक्ति चाहिए तब कहेंगे मास्टर सर्वशक्तिमान। तो बाबा ने वरदान दिया है- मास्टर सर्वशक्तिवान बनो।

बाबा कहते, तुम बच्चे जब ऐसी सम्पूर्ण स्थिति बनायेंगे, तुम्हारी सूरत जब ऐसी दिव्य और अलौकिक होगी तब यह पुरानी दुनिया विनाश हो नई दुनिया की स्थापना होगी। तो क्या हम राजयोगी, बाबा की यह आश पूरी नहीं करेंगे? दूसरा, बाप को प्रत्यक्ष करना है। जब आप सभी की स्थिति ऐसी सम्पन्न दिव्य बने, ऐसा आप सबका चेहरा दिव्य हो तब ही आप बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। और वैसे भी बाबा कहते तुम्हें सारे विश्व को साइलेन्स का दान देना है। तो सभी अपने को ऐसा सम्पन्न बनाओ, विकर्म विनाश करो लेकिन साथ-साथ मन का मौन, मुख का व व्यर्थ संकल्पों का मौन रखो जिससे संकल्प, समय, शक्ति सब पॉवरफुल हो। और साइलेंस की ऐसी पॉवर चारों और फैले, हमसे ऐसे सूक्ष्म वायब्रेशन फैलें जिससे सचमुच पूरे विश्व में शान्ति की किरणें जायें क्योंकि हमारा लक्ष्य है विश्व में शान्ति हो। सारे विश्व को शान्ति का दान मिले, यह शान्ति की शक्ति ही सबकी बुद्धियों को बदलेगी और जो हमारी व बाबा की इच्छा व है वह जानें। और दूसरा - शान्ति की किरणें चारों और फैलें जिससे शान्ति की स्थापना हो अथवा यह अशान्ति जो है वो खत्म हो जाये। यह सूक्ष्म वायब्रेशन जायें क्योंकि कई लोग वायब्रेशन को बहुत मानते हैं। तो हमें विश्व को वायब्रेशन देना है। ताकि सबकी सूक्ष्म मनोवृत्तियां समय अनुसार परिवर्तित हों। जब समय अनुसार साइंस इतनी प्रगति कर रही है, चाहे विनाश के लिए, चाहे नई दुनिया के लिए नई-नई खोज कर रही है फिर भी वह तो चांद और तारों तक ही जा पाते और हमें तो जाना है सूर्य, चांद से भी पार, तो कौन ऊंचे हुए? साइंस बड़ी या साइलेन्स बड़ी? साइलेंस बड़ी हुई ना, तो क्यों नहीं हम ऐसी साइलेन्स की शक्ति चारों तरफ फैलावें, तब यह पुरानी दुनिया परिवर्तन हो और हम अपनी नई पावन शान्ति की दुनिया में चलें। हमने अपने संकल्पों के बन्धनों की रस्सियां जो बांधी हैं, उसको खोल दो तो कोई बन्धन नहीं है। वह रस्सी है मनमत। मनमत की रस्सियाँ छोड़ो, मनमत माना देहअभिमान, इस रस्सी को छोड़ो तो हम आत्मा मुक्त हैं अथवा बाबा के संग हम खुशियों का वरदान ले रहे हैं। अरे हमें भगवान ने कहा है तुम्हारी दृष्टि वृत्ति सब पावन हो। अब तो हम बाबा की पावन सजनियां हैं, पावन थे, पावन हैं और पावन रहेंगे। ऐसी इतनी स्वयं में पावन रहने की शक्ति हो।

कमाल है बाबा की ! ओमशांति का मंत्र सारे विश्व में गूंज रहा है

मीडिया वालों की महफिल में आकर मुझे बहुत ही खुशी हो रही है। कमाल है ओमशांति मीडिया वालों की। चारों तरफ ये मेरे साकार बाबा ने, मैंने बाबा को कहा कि बाबा अभी मेरे को देख हरेक ऐसे नमस्ते करता है मैं क्या बोलूँ उनको? जो देखेंगे, मिलेंगे वो बाबा ने प्यार से कहा, ओम शांति बोल दो। मुझे इतना अच्छा लगा, एक बारी ओम शांति कहो तो लाइट हो जाते हैं, दूसरी बारी कहो तो माइट आ जाती है, तीसरी बारी कहो तो एवरीथींग राइट हो जाता है। यहाँ आकर दादी हृदयमोहिनी को देखा तो ये महफिल और ही सुहानी हो गई। तो आज का दिन सामने बाबा को देख बोलीं कि बाबा की कमाल है। अब दुनिया वालों को संदेश देने के लिए ओमशांति मीडिया पत्रिका निकाली। ये बहुत ही अच्छा है। मुरली में बाबा ने वरदान में कहा ना कि बाबा को याद नहीं करो, बाबा को कम्बाइंड बना दो। इसमें इतना बल आता है। बाबा साथी है ना! मैं बस साथी बन जाऊं। हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। ये सारी लाइफ का अनुभव है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो मुझे काजी का, धर्मराज का डर नहीं है। धर्मराज की ताकत ना हो मेरे सामने आवे। मैं भाषण करना नहीं जानती हूँ, पर मेरा बाबा, शुक्रिया बाबा, जो आज दिन तक कहता है मुस्कराना तेरा फर्ज़ है, धर्म भी है तो कोई बात मुश्किल नहीं। उसके बाद धर्मराज को छुट्टी दी है। विदेश सेवा में बाबा ने भेजा है। खास बाबा के कमरे में दादीयों ने बाबा को बुलाया, मुझे विदेश भेजने के लिए। दादी ने विदेश का अनुभव साझा करते हुए कहा विदेश में खास मिडलिस्ट कंट्रीज में जाना हुआ, वहाँ मुझे बताया कि आपको मस्जिद में जाकर भाषण करना है। तो मैंने बाबा को कहा मैं क्या बोलूँगी? तब बाबा की बात याद आई बाबा ने कहा था कि तुम जाकर सिर्फ तीन बार ओमशांति बोलना, और उनको प्यार से दृष्टि देना। मैंने वैसे ही किया और वो बहुत खुश हुए। और कहा आप तो दादी कमाल की हैं। परमात्मा ने आपको एक फरिश्ते के रूप में हमारे यहाँ भेजा है। ये मेरा भाग्य है, दुनिया वालों को पता है ये कौन है और किसकी है। किसने यहाँ तक लायक बनाया है। उसमें भी इसके पास ऐसी आत्मायें निकली हैं भले और धर्म की हों। परन्तु उसको, अपने धर्म में भी अच्छी बनें ये भावना रखने से उनको खुशी होती है। और वो शांति का अनुभव करते हैं।

ओमशांति मीडिया में दादी जानकी और दादी हृदयमोहिनी।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 3

चलते-चलते सबको दिखाई आध्यात्मिकता की राह....

जहां में जान डालने वाली दादी का अव्यक्तारोहण

चलते..... चलते..... पूरा किया जीवन का सफर
चलते.... चलते..... यूंही वो मिल गया था.....

कहा जाता है ज़िन्दगी का सफर अगर यूं ही कट जाये तो लोग उसे अप्रतिम नहीं मानते, कहते कुछ तो विशेष करते ज़िन्दगी में, जिसे सभी अपनी यादों में समा लेते। बस कुछ ऐसा ही इतिहास हम आपके सामने रखने जा रहे हैं जो अपने आप में अद्वितीय है। एक ऐसा विवरण, एक ऐसा वृत्तांत जो मर्मस्पर्शी है, दिल को अह्लादित करने वाला है और कुछ ऐसा सिखा जाने वाला है जो जीवन को सुखदायी बना जायेगा। ऐसी विदुषी राजयोगिनी दादी जानकी का सम्पूर्ण इतिहास हम आपके सामने कुछ शब्दों के माध्यम से लेकर आना चाहते हैं।

मानव का सम्पूर्ण चरित्र, उसके कर्मों का बीज संस्कार है और संस्कारों का बीज संकल्प है। बस उन्हीं संकल्पों को जिसने शिरोधार्य किया उसी महान हस्ती का नाम राजयोगिनी दादी जानकी है। आपने निराकार दादी के साथ खेलते हैं, उन्हें पुचकारते हैं, प्यार करते हैं, बहलाते हैं। आज अपने मोहपाश में दादी ने परमात्मा को बांध रखा है। आप सोच सकते हैं कि कितनी शक्तिशाली रही होंगी हमारी दादी। आजादी के तुरन्त बाद जाति-प्रथा सहित अनेक बन्धनों को तोड़कर दादी जानकी ने अपनी यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ा। सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध न कर स्वयं को ही आत्मसंयमित कर दादी ने अपने कदम आगे बढ़ाये। बात करने से पता चलता है कि दादी जी के मन में बचपन से ही दूसरों के जीवन को सुखी बनाने की प्रेरणा आती रहती थी। आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक चरण में आप शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहीं, फिर भी आपने इस पथ पर अपनी भूमिका को परमात्मा की श्रीमत के आधार से बखूबी निभाया। यज्ञ इतिहास में यह बात

अपने संकल्पों के माध्यम से अपने जीवन को सबके लिए आदर्श बनाया। आपने वो कर दिखाया जो एक साधारण मानव को सोचना भी दूभर लगे, एक आईना रहीं आप इस संसार के लिए, वो इसलिए क्योंकि आपने गृहस्थ जीवन से निकलकर वो किया जो समाज को गंवारा नहीं था। आज हर दिल की चहेती बनी दादी जानकी ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के सफलतम 104 वर्ष पूरे कर लिए हैं। भक्ति भाव से भरी दादी जानकी इस ज्ञान में आने से पहले वो सब कुछ करती थीं जो एक नौंधा भक्ति वाला करता है। एक चाह थी, एक खोज थी, एक तलाश थी उसे पाने की जिसे गुफाओं, कन्दराओं में हज़ारों वर्ष तपस्या करने के बाद भी कोई मनीषी वहां तक पहुंच नहीं पाया। लेकिन दादी जानकी ने अपने जीवन को उस पथ पर पूर्णतया समर्पित कर दिया और उसे ढूंढ कर ही दम लिया। आज वो दिलाराम परमात्मा शिव आती है कि दादी को सेवा भी ऐसी मिली थी जिसे सभी लोग नहीं कर सकते थे। वो हमेशा यज्ञ में आये हुए यज्ञ वत्सों की व्याधियों को ठीक करने तथा उन्हें सेवा देने का काम करती थीं। बीमारी आदि से ग्रस्त भाई-बहनों की नर्स के रूप में आपने खूब सेवा की और वह उस समय की थी जब आप खुद शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं थीं।

दादी एक प्रखर प्रज्ञा

क्या भाषा बाधा हो सकती है हमारी प्रगति में? शायद नहीं, वो इसलिए क्योंकि दुनिया में लोग भाव को महत्व ज़्यादा देते हैं, भाषा को नहीं। प्रखर प्रज्ञा के रूप में जानी जाने वाली हमारी दादी इसका एक मिसाल हैं जिन्होंने विदेशी भाषा को न जानने के बावजूद भी अपनी योग शक्ति व परमात्म बल से विदेशी जनों को भी अपना बनाया और ऐसा बनाया कि आज विदेश के सभी प्रबुद्ध जन दादी के एक-एक महावाक्य को अपने लिए प्रगति की सीढ़ी मानते हैं। लौकिक शिक्षा दादी की बहुत कम रही परन्तु अपनी चौदह वर्षों की तपस्या के बल से उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा को अपने अंग-अंग में उतारा।

डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित

दादी को विश्व जनमानस के मन में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के अनुपम कार्य के लिए विशाखापट्टनम स्थित गीतम यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया, जिसके तहत आपने लाखों लोगों की ज़िन्दगी में सकारात्मक बदलाव लाया। आज हमारी दादी जानकी प्रखर प्रज्ञा के रूप में चारों तरफ अपनी प्रज्ञा को बिखेर रही हैं। उनके द्वारा अनेकानेक आत्माओं के ज्ञान चक्षु खुल रहे हैं।

दादी जानकी को ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से पाश्चात्य संस्कृति को भारतीय संस्कृति के साथ मिलाने के लिए सेवा पर भेजा गया। उनके अन्दर पूर्णतया भारतीय संस्कृति का भाव घर कर जाये इस आधार से उन्होंने पाश्चात्य देशों में मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। सन् 1970 में दादी पहली

ये गीत उनके जीवन जीने की वजह बना, लेकिन उसे चरितार्थ किया मौलाई मस्ती में रहने वाली राजयोगिनी दादी जानकी ने, एक ऐसी मस्त फकीर, जिसने इश्क-ए-हकीकी द्वारा उस खुदा की खिदमत में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अपने जीवन के हर कदम में उसे अपना साथी बना लिया। दूसरों के जीवन के लिए समर्पित दादी को एक ऐसे ही सहारे की ज़रूरत थी जो उसका साथ हर पल, हर क्षण देता रहे। राह में छोड़ के जो कभी गुमराह न हो जाए, ऐसे परमात्मा को दादी ने अपने ज्ञान और योग की शक्ति से अपना बनाया और ये गीत गुनगुनाया... यूं ही वो मिल गया...

बार इंग्लैण्ड गईं और अपनी आध्यात्मिक शक्ति और प्रखर प्रज्ञा के आधार से पाश्चात्य संस्कृति में मूल्यों को सिंचित किया। आज उनकी प्रज्ञा के आधार से ही लगभग सेवाओं का विस्तार 140 देशों तक पहुंचा है।

ऐसी दादी को यदि हम विश्व की तीव्रतम व सभी की बुद्धि को भेदने वाला ब्रह्मास्त्र कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज उनका एक-एक शब्द एक अस्त्र की तरह ही लगता है जो सारी बुराइयों को एक सेकण्ड में नष्ट कर सकता है।

जो हमने देखा .... जो पाया....

एक बार की बात है, दादी आबू रोड से 6 कि.मी. दूर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर में स्थित एक विशाल सभागार डायमण्ड हॉल में एक भव्य कार्यक्रम को सम्बोधित कर रही थीं, संयोगवश उसमें 'तत्कालीन उपराष्ट्रपति माननीय श्री भैरो सिंह शेखावत जी' भी उपस्थित थे। जब अपने मुख्य अतिथिय भाषण में माननीय श्री उपराष्ट्रपति बोल रहे थे, तो उनके मुख से दो बार एक ही शब्द निकला कि "बह्माकुमारियाँ आत्मा सो परमात्मा का ज्ञान सबको दे रही हैं कि आत्म ही परमात्मा है।" तो दादी ने उस समय कहा था कि पिछले छह दशकों से हम इसी बात पर प्रयास कर रहे हैं, स्पष्ट कर रहे हैं कि आत्मा अलग है और परमात्मा अलग है। यहाँ हम यह स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि दादी का भगवत् प्रेम मानव प्रेम से बहुत ऊपर है, उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि बुरा लगेगा, लेकिन भगवान की श्रीमत को सबसे ऊपर रखा और बीच में रोक कर यह बात कही। और यह बात हमारे माननीय उपराष्ट्रपति को बहुत अच्छी लगी, उन्होंने यह कहा भी कि आपकी परमात्म आस्था देखकर मैं धन्य हो गया।

दादी निर्भीक हैं इस बात को आप उपरोक्त उदाहरण द्वारा देख भी सकते हैं। उन्हें यह पूर्णतः विश्वास है कि यह संस्था ईश्वरीय आधार से है ना कि मानवीय आधार से। कोई भी परमात्मा के कार्य को लेकर असमंजस में ना रहे इसका जीता-जागता और ज्वलंत उदाहरण दादी जानकी हैं। हमने सबसे ज़्यादा दादी से एक ही चीज़ सीखी है कि जो परमात्म बल से चलता है उसे दुनिया सलाम करती है क्योंकि लोग उस बल से हमेशा नीचे ही हैं और प्रायः उसे एक अनजान शक्ति के रूप में देखते हैं लेकिन वह शक्ति प्रकट होती है हमारी धारणाओं से। इसलिए तो दादी के सामने जाते ही एक बल एक भरोसे का पूर्णतः एहसास हो जाता है।

विभिन्न भाषाओं के बीच बोया आध्यात्मिकता का बीज

राजयोगिनी दादी जानकी की मेधा-शक्ति की प्रबलता का आंकलन, हम उनके सभी के मनोभावों को पढ़ने के तरीके से लगा सकते हैं। आध्यात्मिकता के बल से आपने विदेशी संस्कृति के लोगों पर अलग छाप छोड़ी। दादी संस्थान की ओर से 1970 में पहली बार विदेश सेवा हेतु लंदन गईं और वहां पर सबके मनोभावों को पढ़कर लोगों के अन्दर मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। विदेशी संस्कृति के लोग भी इन मानवीय मूल्यों को अपनाने में खुशी महसूस करते थे। इसका उदाहरण व परिणाम यह है कि लगभग 140 देशों में आध्यात्मिक मानवीय मूल्यों का संचार हो चुका है। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में दादी जानकी ने उस ओर कदम बढ़ाया जहाँ बीजारोपण करना बहुत कठिन कार्य था। लेकिन दादी के सतत् प्रयासों से आज संस्था का विस्तार विदेश तक जा पहुंचा है।

आनंद का दूसरा नाम दादी जानकी

कहा जाता है कि सूक्ष्म शरीर में सात चक्र विद्यमान हैं, इन्हीं चक्रों के द्वारा सूक्ष्म शरीर को ऊर्जा मिलती है और शरीर स्वस्थ रहता है। कहते हैं चक्रों में सर्वश्रेष्ठ चक्र सहस्रार है जिसके खुलने के बाद व्यक्ति आनंदित रहता है, उसे और कुछ भी नहीं भाता परमात्मा के सिवाए। वो हमेशा उसी आनन्द में खोया रहता है। हमारी दादी जानकी का वही आनंदमयी चक्र पूर्णतया खुल चुका है उनके मुख से एक ही बात निकलती "कितना मीठा, कितना प्यारा, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा" बस और कुछ नहीं। हमेशा आनंद रस से सराबोर हमारी राजयोगिनी दादी जानकी सभी को उसी रस से सराबोर करने की कोशिश करती। उनकी बुद्धि और कहीं जाती नहीं, स्थिर चित्त दादी को विश्व की प्रथम स्थिर चित्त महिला के खिताब से भी नवाजा जा चुका है। मनोवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने भी दादी की शक्ति के आगे अपने आपको नतमस्तक किया। ऐसी हमारी 104 वर्षीय परम आदरणीय दादी जानकी ने अपना समस्त जीवन ईश्वरीय सेवा अर्थ सफल कर अव्यक्तारोहण होकर नई सेवा के लिए फरिश्ता बन उड़ गईं। हम सर्वस्व जिज्ञासुओं का श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 4

भारत के महामहिम तथा प्रधानमंत्री ने किया श्रद्धा सुमन अर्पित

मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय संस्थान की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी के स्वर्गवास के बारे में जानकर अत्यंत दुःख हुआ।
पिछले वर्ष दिसंबर में मुझे माउंट आबू जाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। उस स्नेहाशीष की स्मृति मेरे मानस पटल पर सदैव अंकित रहेगी। राजयोगिनी दादी जानकी ने मानवता और जनसेवा में अपना पूरा जीवन अर्पित कर दिया। वह लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में आगे रहीं। अध्यात्म, समाज कल्याण और विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा है। उनका व्यक्तित्व और जीवन हम सभी को समाज व देश की निःस्वार्थ सेवा करने के लिए प्रेरित करता रहेगा।
मैं आपको एवं ब्रह्माकुमारीज़ के अन्य सभी सदस्यों एवं उनके अनगिनत श्रद्धालुओं के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ। ईश्वर आप सबको इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।- **महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, भारत**
ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रमुख मार्गदर्शक राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर शोक व्यक्त करता हूँ और विश्व भर में उनके असंख्य अनुयायियों और ब्रह्माकुमारी वृहत्तर परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ।
-भारत के उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू भारत

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के देहावसान के समाचार से मुझे गहरी वेदना हुई। उन्होंने अपना सारा जीवन समाज की सेवा और उसके सशक्तिकरण के लिए लगा दिया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमें निःस्वार्थ भाव से समाज सेवा की प्रेरणा देता है। - **राजनाथ सिंह,रक्षामंत्री, भारत सरकार**

दादी जानकी ने अपने साथ दूसरों का सकारात्मक बदलाव किया है। महिलाओं के सशक्तिकरण में उनका प्रयास उल्लेखनीय था। भावपूर्ण श्रद्धांजलि।
- माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी,भारत
मानवता, सादगी और करुणा की प्रतीक ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के निधन से अत्यंत दुःख हुआ। दादी जानकी ने मानवता की सेवा को ईश्वर का कार्य मानकर जीवन का एक-एक क्षण उसके लिए अर्पित किया। और उनके सभी अनुयायियों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ। - **अमित शाह होम मिनिस्टर**
आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारी सेवा संस्थान की आध्यात्मिक प्रमुख प्रशासिका एवं स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एम्बेसडर राजयोगिनी दादी जानकी के निधन का समाचार सुनकर अत्यंत दुखी हूँ। दादी ने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा एवं अध्यात्म के प्रचार-प्रसार में अर्पित कर दिया। **-जगत प्रकाश,नड्डा,भारतीय जनता पार्टी,राष्ट्रीय अध्यक्ष**
ब्रह्माकुमारीज़ की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। उन्होंने असंख्य लोगों को जीने की राह दिखाई एवं दूसरों के कल्याण हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित किया। महिला सशक्तिकरण के लिए किए गए उनके कार्य मुझे हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।
- मुख्यमंत्री,मध्यप्रदेश शिवराज सिंह चौहान

राजयोगिनी दादी जानकी के निधन की खबर जानकर बहुत दुःख हुआ।
महिलाओं द्वारा संचालित दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका तथा स्वच्छ भारत मिशन ब्रांड एम्बेसडर के रूप में राजयोगिनी दादी जानकी के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। नारी शक्ति की प्रेरणास्रोत राजयोगिनी दादी जानकी अपने कार्यों और सेवाओं के कारण सभी लोगों के हृदय में हमेशा जीवित रहेंगी। उन्होंने त्याग, तपस्या और अद्वितीय प्रतिभा से दुनिया के 140 देशों में मानवीय मूल्यों के बीजारोपण के हज़ारों सेवाकेन्द्रों की स्थापना कर लाखों लोगों को एक नयी ज़िन्दगी दी। राजयोगिनी दादी जानकी ने पूरे विश्व में मन, आत्मा की स्वच्छता के साथ बाहरी स्वच्छता के लिए अनोखा कार्य किया जिसके लिए भारत सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एम्बेसडर भी बनाया था। ऐसी महान आत्मा को चिरशांति मिले ऐसी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। - **विजय रुपाणी,मुख्यमंत्री,गुजरात सरकार**

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि। वह हमारे समय की सबसे प्रेरणादायक आध्यात्मिक नेताओं में से एक थीं। मेरे विचार उनके लाखों अनुयायियों के साथ हैं। ईश्वर उन्हें शक्ति दे।
- अशोक गहलोत,मुख्यमंत्री,राजस्थान सरकार

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के देवलोकगमन पर शोक व्यक्त किया है। आदरणीय दादी माँ का पूरा जीवन मानवता की सेवा में समर्पित रहा। विश्व शांति व समाज के लिए इनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता है। वे विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला थीं। उन्होंने 140 देशों में स्थित संस्थान के 8500 सेवाकेन्द्रों का कुशल संचालन किया। देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एम्बेसडर भी नियुक्त किया था। दादी के नेतृत्व में पूरे भारत वर्ष में विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाए गए।
-मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत,उत्तराखंड सरकार

आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के निधन का समाचार दुःखद है। दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारी संस्थान के माध्यम से पूरे समाज को अध्यात्म के रास्ते पर आगे बढ़ाने में अतुलनीय योगदान दिया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। **-भुपेश बघेल,मुख्यमंत्री,छत्तीसगढ़ सरकार**

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी का निधन देश के लिए बड़ी क्षति है। दादी ने स्वच्छ भारत मिशन के ब्रांड एम्बेसडर के रूप में देश में स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति दे।- **नितिन जयराम गडकरी,परिवहन मंत्री,भारत सरकार**

अचल प्रतिबद्धता के साथ जन सेवा करते हुए ब्रह्माकुमारी की प्रमुख राजयोगिनी जानकी ने करोड़ों जन को अपने व्यक्तित्व-कृतित्व से प्रेरित किया है। उनके दवेलोकगमन की सूचना भाव विहल करने वाली है। - **योगीआदित्यनाथ,मुख्यमंत्री,उ.प्र. सरकार**

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर मुझे गहरा दुख है। दादी जानकी ने पूरी दुनिया को अध्यात्म का संदेश दिया और विश्व शांति की राह दिखाई। वे अंतिम समय

तक समाज की सेवा करती रहीं। उनका पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित रहा। - **राज्यपाल अनुसुइया उइके,छत्तीसगढ़**

विश्व में आध्यात्मिक प्रेरणा का सबसे विशाल संगठन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के देहांत के समाचार से हृदय को गहरा दुख पहुंचा है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति मिले।
- डॉ. रमन सिंह,पूर्व मुख्यमंत्री,छत्तीसगढ़

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के देहांत का समाचार सुनकर अत्यंत दुख हुआ। उनका निधन आध्यात्मिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। और अनुयायियों को यह क्षति सहन करने का संबल प्रदान करें।-**सचिन पायलट, डिप्टी चीफ मिनिस्टर,राजस्थान सरकार**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी जानकी के देहावसान पर मुझे गहरा दुःख हुआ है। नारीशक्ति की प्रेरणास्रोत दादी जानकी ने पूरे विश्व को शांति एवं सद्भाव की राह दिखाई है। उन्होंने विश्व को अपने आध्यात्मिक विचारों से दिशादर्शन किया है। उनके निधन से समाज में अपूरणीय क्षति हुई है। -
आचार्य देवव्रत,राज्यपाल,गुजरात

28 सितम्बर 2019 में माउन्ट आबू में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी का मुझे संस्थान में भी आशीर्वाद मिला और मंच पर भी आशीर्वाद मिला। आध्यात्मिक चेतना की प्रतीक दादी जानकी भौतिक रूप से आज हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन सनातन चेतना के माध्यम से हमारे मध्य हमेशा उपस्थित रहेंगी और उनका आशीर्वाद सदैव हमें ऊर्जा प्रदान करता रहेगा। दादी द्वारा दिए गए प्रवचन, मानवता के मध्य प्रसारित किया गया प्रेम और शान्ति की अपील हमें हमेशा मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित करती रहेगी। दादी जानकी की आत्मा को परमपिता परमात्मा शान्ति प्रदान करें।- **अर्जुन राम मेघवाल,यूनियन मिनिस्टर**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी को अहिंसा विश्व भारती की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि। दादी सही मायनों में सच्ची भारत रत्न थीं।
- आचार्यलोकेशमुनि

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका व स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एम्बेसडर राजयोगिनी दादी जानकी के निधन की खबर से मन व्यथित है।
140 देशों में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की स्थापना कर लाखों लोगों में आध्यात्मिक चिंतन के बीज बोने की दिशा में उनका योगदान हम सबके लिए प्रेरणादायक है। **-डॉ. हर्षवर्धन,मिनिस्टर ऑफ हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर,भारत**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के असामयिक देवलोकगमन का समाचार जानकर मुझे गहरा आघात लगा है। महिलाओं द्वारा संचालित विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका तथा स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एम्बेसडर राजयोगिनी दादी जानकी का 104 वर्ष की उम्र में देहावसान हुआ है। हाल ही में महामहिम राष्ट्रपति महोदय के साथ मुझे आबू स्थित आश्रम जाने का अवसर मिला था।
ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा पूरे विश्व में शांति का संदेश दिया जाता है। जो वास्तव में आज के समय की माँग है। प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में शांति की आवश्यकता होती है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नारी शक्ति की प्रेरणास्रोत राजयोगिनी दादी जानकी ने अपना पूरा जीवन नारी शक्ति, मानव कल्याण एवं मानवमात्र की सेवा में अर्पित किया है। दादी जानकी के देवलोकगमन से पूरे मानव समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि सभी अनुयायियों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।
- कलराज मिश्रा,राज्यपाल,राज.

उत्तराखंड विधानसभा अध्यक्ष प्रेमचंद अग्रवाल ने महिला शक्ति की प्रेरणा स्रोत एवं ब्रह्माकुमारी की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर शोक व्यक्त किया है। अग्रवाल ने अनगिनत अनुयायियों के प्रति सांत्वना प्रकट करते हुए दादी जानकी की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है।

देश-विदेश से संस्थान से जुड़े कई गणमान्य व वी.आई.पी. आदि ने अपने भावभीनी श्रद्धासुमन अर्पित किए।

लोक सभा स्पीकर ओमप्रकाश बिड़ला, असम के राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी, हरसिमरत कौर, राज्यपाल विश्व भूषण हरिचंदन,आन्ध्र प्रदेश, रविशंकर प्रसाद कानून मंत्री,भारत, ओडिशा के राज्यपाल गणेशीलाल, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय, जी. किशन रेड्डी,केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री,भारत सरकार, महेन्द्रनाथ पाण्डेय,स्कील डेवलपमेंट एवं एंटरप्रेन्योरशिप मंत्री,भारत, नरेन्द्र सिंह तोमर,कृषि मंत्री, पूर्व जनरल वी.के. सिंह, धरमलाल कौशिक,नेता प्रतिपक्ष,छत्तीसगढ़, कमल नाथ,पूर्व मुख्यमंत्री,मध्य प्रदेश, ओम प्रकाश धनखड़,बीजेपी नेता,हरियाणा, पॉवर मिनिस्टर,बी.डी.कल्ला,राज. मुख्यमंत्री पेमा खांदू,अरूणाचल, प्रेमचंद अग्रवाल,विधानसभा अध्यक्ष,उत्तराखंड।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 5

दादी की बेहद मानवता की सेवाओं के मुख्य पड़ाव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्यों का संचालन करने तथा संस्थान का विकास करने के कार्य में राजयोगिनी दादी जानकी का जीवन अनूठा रहा है। 27अगस्त 2007 में 91 वर्ष की आयु में दादी जानकी को इस संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया। सन् 1974 में दादी ब्रिटेन पहुंची जहाँ उन्हें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के एक केन्द्र की स्थापना करने एवं उसका संचालन करने का जिम्मा सौंपा गया था। उनकी प्रेरणा से एवं उनके निर्देशन में अनेक ईश्वरीय सेवाकेन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं तथा दुनिया के करीब 137 देशों में भी ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हो चुकी है। 129 देशों में अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों, मूल्यों एवं योजनाओं के क्रियान्वन के लिए ज़मीनी स्तर पर दादी ने शुरूआत की। उनके सम्मान में 1977 में लंदन में "जानकी फांउडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थकेयर" की स्थापना एवं सेवाओं की शुरूआत की गयी थी। अपने दशकों की मानवीय सेवा के दौरान दादी का हमेशा यह प्रयत्न रहा कि मनुष्यों के सर्वांगीण विकास का प्रयत्न किया जाना चाहिए, जिससे उनका भावनात्मक, आध्यात्मिक, रचनात्मक एवं सामाजिक विकास हो सके। दादी जी ने ऐसा ही किया।

प्रकाशित पुस्तकें

- विंग्स ऑफ सोल, 1999 में हीथ कम्युनिकेशन्स के द्वारा
- पर्ल्स ऑफ विजडम, 1999 में हेल्थ कम्युनिकेशन्स के द्वारा
- कम्पैनियन्स ऑफ गॉड, 1999 में ब्र.कु. आई एस द्वारा
- इनसाइड आउट, 2003 में ब्र.कु. आई एस द्वारा
- दादी जानकी द्वारा आम जन के लिए दी गयी सेवाएं

2007
- सेंटर ऑफ एक्सेलेंस फॉर वुमेन्स हेल्थ, कैलिफोर्निया, सैन फ्रांसिस्को में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रवचन
- सैक्रामेंटो के स्पिरिचुअल लाइफ सेंटर के वरिष्ठ मंत्री माईकेल मोरन के साथ सिक्रेट्स ऑफ ट्रांसफॉर्मेशन पर चर्चा

2006
- जस्ट ए मिनट के प्रारम्भ के अवसर पर रोबिन गिब्स द्वारा कविता "मदर ऑफ लव" दादी जानकी को समर्पित की।

2005
- लंदन में आयोजित एक त्रिदिवसीय सम्मेलन- 'बी द चेंज' के दूसरे दिन 'मनुष्य एवं उनका ग्रह' नामक विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रकट किए।
- कैंब्रिज अमेरिका में दादी जी को 'करेज ऑफ कॉन्शन्स्' अवार्ड प्रदान किया गया।
- जून 2005 में मियामी में सम्पन्न what the bleep do we know? नामक कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन प्रस्तुत किया।
- जून 2005 में दादी जी को Kashi Humanitarian Award प्रदान किया गया।
- दिल्ली में सम्पन्न द्वितीय International Conference of Global Mothers, मास्को की एक संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

2003
- यरुशलम में सम्पन्न World Congress of Religious Leaders के सम्मेलन में दिसम्बर में दादी ने भाग लिया।
- जून 12-14 के बीच ओस्लो में Global Peace Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादी जी ने मुख्य वक्ता के तौर पर अपने विचार रखे।
- लंदन के ओलंपिया कांफ्रेंस सेंटर द्वारा आयोजित Mind Body and Soul Exhibition में Quiet Room का उद्घाटन योगशक्ति राजयोगिनी दादी जानकी ने किया।
- शेलडोनियन थियेटर ऑक्सफोर्ड में "Through the Brain Barrier" नामक विषय पर दादी जानकी, प्रो. कोलिन ब्लैकमोर एवं डॉ. पीटर फेनविक के बीच डायलॉग चला।

2002
- बर्मिंघम में आयोजित "Respect, Its All About Time" नामक कार्यक्रम में दादी जी प्रिंस ऑफ वेल्स सहित अनेक आध्यात्मिक नेताओं के साथ शामिल हुईं।
- मैड्रिड में द्वितीय "UN World Summit On Sustainable Development" के लिए एक प्रतिनिधि मंडल का दादी ने नेतृत्व किया।
- दादी जी ने जेनेवा में आयोजित "The Globle Peace Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders" नामक सम्मेलन में भाग लिया।

2000
- Wings of Soul नामक दादी जी की दूसरी पुस्तक का विमोचन संपन्न हुआ।
- Pearls of Wisdom नामक दादी जी की तीसरी पुस्तक का भी विमोचन हुआ।

1999
- जेनेवा में आयोजित "UN World Summit on Social Development" के लिए दादी जी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- स्वीट्ज़रलैंड में आयोजित कार्यक्रम The Human Aspects of Social Integtration में दादी जी ने अपनी प्रस्तुति दी।
- न्यूयार्क के यू.एन.जनरल एसेम्बली हॉल में Millenium world Peace Summit of Religious & Spiritual Leaders नामक एक कार्यक्रम में दादी जी ने ब्रह्माकुमारीज़ प्रतिनिधि मंडल को अपना नेतृत्व दिया और अपना वक्तव्य भी प्रस्तुत किया।
- State of The World Forum न्यूयार्क में अपनी प्रस्तुति दी।

1997
- ग्लोबल अस्पताल एवं शोध संस्थान, आबू पर्वत के कार्यों के सफल संचालन के लिए दादी जी ने जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थ केयर नामक संस्थान को अपना नाम प्रदान किया। इससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं हेल्थ केयर के क्षेत्र में आध्यात्मिकता के योगदान के प्रति लोगों के नज़रिये में बदलाव आया।

1996
- इस्तांबुल,टर्की में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सेटलमेंट-2 नामक सम्मेलन में दादी जी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- उक्त सम्मेलन में विश्व की विभिन्न सरकारों को दादी जी ने मानवोन्मुख विकास, मनुष्यों की भूमिका एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संदर्भ में उनके कार्यकलाप क्या हों, इसकी जानकारी दी।
- दुनिया के 60 से भी अधिक देशों के बच्चों को सिखलाई जा रही लिविंग वैल्यूज इन एजुकेशनल इनिशियेटीव का शुभारम्भ किया। यूनीसेफ सम्बन्ध शिक्षाविदों के साथ मिलकर दादी जी ने इसका प्रारंभ किया - State of The World Forum; San Francisco में एक वक्ता के रूप में भाग लिया।
- सिंगापुर में 5000 लोगों की उपस्थिति में अपनी पुस्तक 'कम्पेनियन ऑफ गॉड' का चायनीज भाषा में विमोचन किये जाने के अवसर पर दादी जी उपस्थित थीं।
- यूनीसेफ की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर यंग वुमेन ऑफ विजडम नामक कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

1995
- बीजिंग, चाइना में आयोजित UN 4th World Conference on women के लिए दादी जी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- राजनीति, विज्ञान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में मूल्यों के विकास का लक्ष्य रखते हुए Sharing Our Values For A Better World नामक एक वैश्विक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसका प्रारम्भ दादी जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

1993
- Inter-Religious Understanding And Co-operation नामक यू.के. में आयोजित एक कार्यक्रम की मेजवानी दादी जी ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न मतों के 600 से भी अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।
- दादी जी 'वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फेथ' की उपसभापति चुनी गयीं।
- ऑक्सफोर्ड के नज़दीक ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर की स्थापना के निमित्त बनीं।

पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के साथ आध्यात्मिक चर्चा करते हुए दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी।

"इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन ग्लोबल को-ऑपरेशन फॉर ए बैटर वर्ल्ड" का शुभारम्भ करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के साथ दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी तथा अन्य अतिथिगण।

संत महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी तथा अन्य संत महात्मायें।

कांफ्रेंस के दौरान सम्बोधित करते हुए दादी जानकी। साथ में मंचासीन ओ.पी. कोहली,राज्यपाल,गुजरात, मृदुला सिन्हा,राज्यपाल,गोवा, ब्र.कु. निर्वैर तथा ब्र.कु. रमेश।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए दादी जानकी। साथ में योगाचार्य बाबा रामदेव तथा ब्र.कु. हंसा।

अरब में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में दादी जानकी व अतिथिगण।

मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ,उत्तर प्रदेश से मिलते हुए दादी जानकी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान,मध्य प्रदेश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जानकी व ब्र.कु. मृत्युंजय।

मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू,आन्ध्र प्रदेश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जानकी।

माउण्ट आबू में आयोजित कांफ्रेंस के दौरान यूनियन मिनिस्टर अर्जुन मेघवाल के साथ आध्यात्मिक चर्चा करते हुए दादी जानकी व दादी रतनमोहिनी।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 6

जो बाबा ने कहा दादी ने किया

ब्र.कु. संतोष दीदी,मैनेजमेंट कमेटी डायरेक्टर और महाराष्ट्र व आन्ध्र प्रदेश की निर्देशिका

जब शुरू-शुरू में मैं बाबा के पास आई और पहली बार जब बाबा से मिली तो बाबा ने मुझे पूना में दादी जानकी के पास भेज दिया। वैसे तो मैंने मुम्बई में मम्मा से ज्ञान लिया। बाबा ने कहा तुम वहाँ मुम्बई में ही रहो। हमारी लौकिक बहनें वहाँ क्लास में आती थी तो हमने कहा बाबा हमें लौकिक से दूर जाना है। हमारी अवस्था परिपक्त बनेगी इसलिए फिर बाबा ने कहा ठीक है मुम्बई पूना के बहुत नज़दीक है तो आप पूना में दादी जानकी के पास जाकर रहो। तब मैं छोटी थी यही कोई 16-17 वर्ष की होगी। कॉलेज में पढ़ती थी मैंने फस्ट इयर किया था। और फिर बाबा से मिलने के बाद, बाबा को देखने के बाद तो पढ़ाई उधर ही रह गई। वैसे मुझे एल.एल.बी. करना था लेकिन मम्मा ने कहा कि काले कोट वाला वकील तुमको नहीं बनना है। तो मम्मा ने मेरा वहीं नशा उतार दिया था। फिर मैं दादी जानकी के पास पूना में जाकर रही। दादी ने अलौकिक जीवन क्या होता है इसकी बहुत अच्छी ट्रेनिंग अपने कर्मों के द्वारा हमें दी। क्योंकि हमने दादी को देखा कि दादी खुद के ऊपर कितनी मेहनत करती है। औरों के ऊपर तो करती थी लेकिन खुद के ऊपर भी बहुत मेहनत करती थी। अमृतवेले उठकर बाबा को याद करती थी। उस समय हम पूना में गोलीबार मैदान के पास सरला दीदी, कमला बहन जो हॉन्गकॉन्ग में है वो, सुन्दरी बहन हम चार बहनें रहती थीं। वो पारसी का घर था।

दादी में कितनी सहनशक्ति थी वो हमने वहाँ देखा। पारसी भी पास में ही रहता था। उसने आधा पोरशन हमको दिया हुआ था। और ये चाहता था कि हम वो घर छोड़ें। इसके लिए वो हमेशा ही सताता था। परन्तु दादी उसको बहुत ही शुभ वायब्रेशन देती थी और हम लोगों को भी कहती थी कि शुभ वायब्रेशन दो। वो यहाँ तक भी करता था जो पार्टीशन था विज़िटिंग रूम में, तो उसमें से वो अंडे के छिलके फेंकता था। हमें बहुत खराब लगता था लेकिन दादी बोलती थी कि तुम ध्यान मत दो, कोई नहीं आपे ही ठीक हो जायेगा। फिर एक दिन सब सेवा के लिए गये हुए थे, दादी भी नहीं थी। तो उस पारसी ने हमारी बाहर पड़ी खटिया को जला दिया। मैं तो छोटी थी तो मुझे तो बहुत रोना आया। दादी आईं तो दादी ने बोला तुम क्यों रो रही हो? तो मैंने कहा कि देखो ना उसने खटिया जला दी। उस समय सिर्फ मैं और कमला दीदी हॉन्गकॉन्ग वाली ही थे।

कमला ने कहा कि पहले खटिया तो बुझाओ। जब दादी को बताया तो दादी ने कहा कोई बात नहीं जाने दो। जल गई तो जल गई। मैं कितने वर्ष तक वहीं थी क्योंकि जब तक दूसरा मकान न मिले तो तब तक मकान छोड़ नहीं सकते थे। तो हम देखते थे कि दादी सवेरे उठकर बाबा को याद करती थी और हम लोग भी सभी उठते थे। हम सब छोटे-छोटे थे और जवान थे तो नींद का ज़्यादा असर होता था। फिर कभी नहीं भी उठते

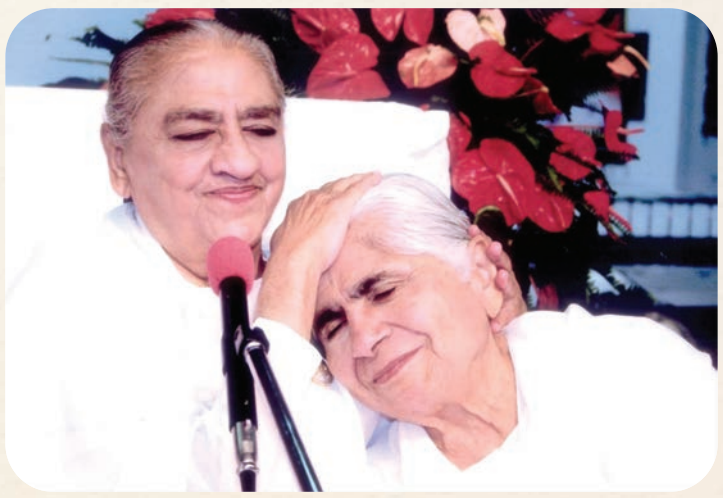

थे। उस समय जल्दी उठकर दादी हमारे लिए चाय बनाती थीं। दादी भोजन भी बहुत सुन्दर बनाती थीं। और मैं दादी को बोलती थी कि दादी मैं क्या सेवा करूँ? तो दादी बोलती थी कि तुम हुनमान हो। तुम्हारा काम है मुर्छित को सुरजीत करना। अब ज्ञान तो इतना समझ में नहीं आता था। मैंने पूछा मूर्छित को सुरजीत कैसे करना है? दादी ने कहा कि जो ज्ञान में ठण्डे हो जाते हैं ना उनको जाकर तुम ज्ञान सुनाओ। जो भी आना थोड़ा बंद कर देते थे या नहीं आते थे, या बीच बीच में आते थे तो दादी मुझे उन माताओं के घरों में भेजती थी।

दादी ने मुझे कोर्स करवाना भी सिखाया। फिर उसके बाद दादी ने मुझे कहा कि अभी जो नये आते हैं ना उनको तुम कोर्स कराओ। मैंने कहा अच्छा मैं करवाऊं? दादी ने कहा हिम्मत करो आ जायेगा तुमको। फिर मैं एक दिन जिज्ञासु को सृष्टि चक्र के चित्र पर समझा रही थी तो उस वक्त कोई न कोई मुझ पर ध्यान रखता था कि मैं कैसे समझाती हूँ। मैं सृष्टि चक्र के बारे में समझा रही थी कि सृष्टि चक्र में चार युग होते हैं, देखो सतयुग में दो बच्चे होते हैं। और फिर उन्होंने पूछा बहन जी त्रेता में कितने होते हैं? तो मैं मूंझ गई। तो त्रेता नाम सुना तो मैंने कहा कि त्रेता में तीन होते हैं, फिर उन्होंने पूछा कितना बच्चा और कितनी बच्चियां? तो मैंने थोड़ा सोचकर कहा कि किसी को दो लड़के और एक लड़की होती है और किसी को दो लड़की और एक लड़का होते हैं। तो मैं ऐसा समझा करके आ गई। फिर मुझसे पूछा कि आज क्या समझाया? मैंने बताया कि दादी मैंने ऐसा-ऐसा समझाया। तो दादी बोली अच्छा समझाया तुमने। दादी हमारे ऊपर बहुत ध्यान देती थी।

हमको यहाँ तक ही नहीं बल्कि खाना कैसे खाते हैं, क्या खाना चाहिए, कैसे बनाना है और सारी ईश्वरीय मर्यादाएं क्या होती हैं ये सब गहराई से सिखाया। दादी की सादगी जबरदस्त थी, जिसके कारण हमें बहुत कुछ सिखने को मिला। कभी-कभी दादी एक कोने में बैठी हुई होती थी। तो एक दिन मैं बोली दादी आप क्या कर रहे हो बैठकर। तो दादी बोली मैं मेरे को कूट रही। मैंने पूछा आप ऐसे कैसे कूट रहे दिखाई तो कुछ नहीं पड़ता, क्या कूट रहे? दादी ने कहा मैं बैठकर ज्ञान को कूटती। इस तरह से विचार सागर मंथन करने की टेव दादी में पहले से ही थी। दादी ने हमें यज्ञ की हर वो सूक्ष्म ते सूक्ष्म बातें कैसे मर्यादा में रहना है और कैसे दूसरों को बाबा का ज्ञान देना है ये सब हमें दादी जानकी ने अपने कर्म द्वारा बड़ी सूक्ष्मता के साथ सिखाया और हमारे अन्दर हमेशा उमंग-उत्साह भरा और योग्य बनाया।

दादी ने सर्वस्व सफल किया और कराया

ब्र.कु. मदनलाल शर्मा(जयपुर), उपाध्यक्ष व्यापार और उद्योग विंग

सन् 1966 में पहली बार मेरा और मेरी युगल रुकमणी का दादी जानकी से पुणे में मिलना हुआ। लेकिन वहाँ पर दादी द्वारा जो सेवा हुई वो एक यादगार बन गयी। इसके बाद हम जब भी दादी से मिलते दादी भी उस मिलन की याद ज़रूर दिलाती। दादी का वह सम्मोहक व्यक्तित्व हमें ज्ञान में आगे बढ़ाने में निरन्तर सहयोग देता रहा है।

सन् 1998 में मैं, दादी गुलज़ार व गोपाल भाई के साथ लंदन आध्यात्मिक यात्रा पर गए हुए थे। आते समय ऑक्सफोर्ड सेंटर पर ठहरे। यहाँ पर दादी जानकी ने मुझे बुलाकर कहा कि मेरी इच्छा है कि तुम कुछ दिन यहाँ ठहरो। मैं वहाँ पर एक महीने रहा तथा पूर्ण रूप से मेरे खानपान व दिनचर्या का ध्यान रखा। दादी की इस तरह की मेहमान नवाजी व आदरभाव मुझे बार-बार साकार बाबा की याद दिलाता था। मेरे जीवन में साकार बाबा ने तो कमाल किया ही है लेकिन दादी जानकी भी कम नहीं थीं। बीच-बीच में मेरा खूब ध्यान रखती थीं। सन् 2003 में कोई समस्या थी तो दादी ने जयंती बहन को भेज कर मुझे लंदन आने का निमंत्रण दिया। इसी से समझ आता है कि यह महान आत्मायें बेहद में भी सभी का कितना ख़याल रखती हैं और अपने आप ही मुख से निकलता है कि बाबा तेरा कितना कमाल है।

सन् 2012 में बाबा ने मधुबन में प्रेरणा दी कि जयपुर में एक और नया व बड़ा सेंटर खोलें। मैंने जयपुर वापस पहुँच कर मकान लेने की कोशिश की। बाबा की कमाल थी कि सेंटर के लायक़ बड़ा मकान बिना किसी मेहनत के ही मिल गया। राजस्थान जोन की इंचार्ज दादी रतनमोहिनी ने भी अनुमति दे दी लेकिन बाद में संचालन को लेकर कुछ बाधा आयी तो दादी जानकी ने एक सेकण्ड में तय कर दिया कि शर्मा बाबा का अनन्य बच्चा है उनके साथ सब मिलकर सेवा करो। आज दादी के आशीर्वाद से सेंटर तो अच्छा चल ही रहा है, साथ में 3000 वर्ग गज के भूखंड पर विशाल व भव्य भवन बाबा ने बनवा दिया।

इस भवन का नाम पीस पैलेस है जो सीकर रोड जयपुर हाइवे पर प्राइम लोकेशन पर है। यहाँ क़रीब 100 भाई और बहनों के ठहरने की व्यवस्था है। यह दादी का ही कमाल है जो सभी का भाग्य बनाने में हमेशा तत्पर रहती थीं। सफल करो और सफलता पाओ के स्लोगन को पूरा करने में भी दादी का उत्कृष्ट योगदान रहा है। इसलिए दादी का इस मामले में मैं पूरा कृतज्ञ हूँ।

चार साल पहले मुझे कैंसर हुआ था। छह कीमो लेने पड़े। कैंसर भयानक था बचना मुश्किल था लेकिन बाबा ने बचा लिया। डॉक्टर भी इस पर आश्चर्य करते हैं। कैंसर से ठीक होने के एक साल बाद मुझे चिकनगुनिया और डेंगू हुआ। यही भयावह स्थिति थी फिर भी बाबा ने बचा लिया। लेकिन एक साथ होने से मुझे कई रोज़ बिस्तर पर ही पड़े रहना पड़ा। थोड़ा बहुत शरीर का हिसाब-किताब चल रहा था। बाबा ने दादी का मुझे शक्तिरूप अनुभव कराया और शरीर का बाक़ी हिसाब-किताब चुकतू कराने का अनुभव प्रैक्टिकल में करा दिया। मेरे लिए व सबके लिए यह एक आश्चर्य ही है, बाबा ने बचाकर मुझको 90 वर्ष की उम्र में पहले से भी अधिक स्वस्थ कर दिया। दादियों की तपस्या और पालना के द्वारा ही आज मैं स्वस्थ हूँ और खुशी से बाबा की सेवा कर रहा हूँ। एक बार फिर से दादी जानकी को शत-शत प्रणाम।

दादी खुद भी लाइट रहीं, हमें भी बनाया लाइट

ब्र.कु. जयंती दीदी (यू.के.डायरेक्टर)

दादी जब लंदन में पहुँची तो उस समय विश्व में दो सेन्टर्स थे। एक था लंदन और दूसरा था हॉन्गकॉन्ग। एक छोटे से घर में गीता पाठशाला के रूप में सेन्टर चलता था। तब वहाँ पर शायद आठ-दस भाई बहन होंगे। तब दादी जानकी शाम के समय पहली बार लंदन पहुँची। उस समय प्रदर्शनी की तैयारी हो चुकी थी। जिसके लिए जगदीश भाई ने नये चित्र बनाये थे। तो उस निमित्त रमेश भाई, उषा बहन, डॉ. निर्मला और मोहिनी बहन ये सब वहाँ थे। बहुत छोटा-सा स्थान था। दादी ने पहुँचते ही पूछा कि सवेरे का क्लास कितने बजे होता? तो डॉ. निर्मला उस समय निमित्त थीं वहाँ। उन्होंने कहा कि दादी अभी तो आप आये ही हों थोड़ा रिफ्रेश हो जाओ, फिर जितने बजे भी आप कहो। आराम से 8 बजे भी हो सकता। तो डॉ. निर्मला हँस के कहती हैं कि क्लास में हम सभी तो होंगे। तो दादी ने पूछा कोई और नहीं आता? हम एक दो को देखने लगे और कहा कि सवेरे तो और कोई नहीं आता, हम ही होते हैं। तो दादी ने कहा अच्छा उनको फोन घुमाओ जो योग्य आत्मायें हैं, उनको बुला लो। तो उस समय हम सब घर वाले थे और एक भाई आ करके पहुँचा। तब दादी ने क्लास करायी।

दादी देखती थीं कि डॉ. निर्मला बहन और मोहिनी बहन शॉपिंग करने जाती थीं तो दोनों हाथों में थैलियां भर करके आती थीं। तो दादी ने तुरंत ही कहा अच्छा ऐसे करना होता? अच्छा ठीक है। फिर दादी ने जो भी आने वाले थे उन्हों की बहुत प्यार से पालना की, उन्हों को समझाया कि बाबा की सेवा में सहयोगी कैसे बनना होता है। तो धीरे-धीरे थोड़े समय के अन्दर ही बहुत कुछ दादी ने चेंज कर लिया। ये था दादी का त्याग। परन्तु दादी ने यही भावना रखी कि जो पालना मुझे बाबा से मिली है, अभी औरों को देनी है।

दूसरा जो विदेश में जाते समय बाबा ने दादी को कहा कि मधुबन का मॉडल बनाना है। तो दादी ने इस बात को कई बार दोहराया। मधुबन का मॉडल माना "मधुबन का सिस्टम, मधुबन के नियम, मधुबन का वातावरण, मधुबन की प्राप्ति जो भी बाबा के घर में आये तो उन्हें मधुबन जैसा ही अनुभव हो।''

इस तरह 1970 में जैसे कि स्पेन, अमेरिका, कनेडा जर्मनी आदि कुछ देश में बाबा की सेवाएं शुरु हुई, फिर 1980 में बहुत सारे देश में बाबा के सेवाकेन्द्र खुले। जब दादी प्रकाशमणि लंदन में आईं तो बहुत कोशिश की कि बहुत सुन्दर स्थान मिले दादी के लिए। तब बाजू के मकान के लिए बात चल रही थी लेकिन किसी न किसी कारण से हाथ से छूट जाता था। जब बड़ी दादी को बताया कि दादी आप आयेंगे तो बहुत सिम्पल स्थान होगा। तो दादी प्रकाशमणि ने बहुत प्यार से लिखा कि मैं जगह को थोड़ी देखने आ रही हूँ, मैं तो सब बाबा के बच्चों को देखने आ रही हूँ। और दादी प्रकाशमणि ने तो उस समय अकेले ट्रैवलिंग की।

एक दिन क्या था कि हम लोग प्रोग्राम से लौटे। तब तक करीब रात्रि के 10:00 बज चुके थे। थोड़ी देर बाद दादी प्रकाशमणि ने कहा अच्छा भोजन करते हैं क्या बना है? तो दादी जानकी मुझे देखे और मैं दादी को देखूँ। क्योंकि उस समय तो सुदेश बहन थीं, मैं थी, दादी जानकी थीं। और रमेश भाई भी उस वक्त आये हुए थे। दादी जानकी ने कहा कि दादी आप तब तक थोड़ा रिफ्रेश हो जाओ और फिर भोजन तैयार होगा। दस मिनट में भोजन तैयार हो गया था। बहुत सिम्पल लाइफ लेकिन बहुत खुशी और बहुत आनन्द की लाइफ।

इस तरह सेवा करते-करते बहुत विदेशी ब्राह्मण बन चुके थे। दादी के ज्ञान का मंथन, दादी का बाबा के साथ सम्बन्ध और यज्ञ के प्रति स्नेह भावना हर एक के अन्दर दादी वो बीज डालती रहीं।

2005 तक तो दादी जानकी को विदेश की भी सेवा, भारत की भी सेवा और विश्व की भी सेवा, वो सारा दादी करती रहीं। फिर 2005 में हम डर्बन(साउथ अफ्रीका) में थे। जब दादी गुल्जार का फोन आया कि बाबा कहते हैं कि आपको भारत में तुरन्त आना है। तो मैंने कहा दादी(गुल्जार) कॉल ऑफ टाइम चल रहा है। तो दादी जानकी ने कहा कि तुम(जयंती) गुल्जार से दुबारा बात करो। दादी गुल्जार से पूछा बाबा छुट्टी देगा कि दादी और दो दिन रूके? और गुल्जार दादी कहे बाबा ने कहा अभी। बस फुलस्टॉप। तो दादी जानकी दो दिन भी ज़्यादा नहीं रूकी। और तब तक यू.के. में 44 सेवाकेन्द्र और अन्य 110 देशों में सेवाकेन्द्र खुल चुके थे। यही है दादियों का त्याग और दादी का बाबा पर और बाबा के कार्य पर निश्चय ही कहें।

चण्डीगढ़। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कैंडल लाइटिंग के पश्चात् ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ जस्टिस राजन गुप्ता,पंजाब एंड हरियाणा हाई कोर्ट, मेयर श्रीमति राज बाला, पूर्व मेयर श्रीमति हरजिंदर कौर, महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. लीला तथा अन्य प्रतिष्ठित लोग।

सांपला-हरियाणा। महिला दिवस पर आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी, स्कूल की निदेशिका कैलाश आदर्श, खंड शिक्षा अधिकारी सुमन हुड्डा, तथा अन्य।

भारत में उभरती सशक्त मातृत्व शक्ति

समाज की धुरी पर ही संसार चलता है और समाज की धुरी अगर कोई है तो वो नारी ही हो सकती है। जिसमें एक माँ है, एक बहन है, एक बेटी है। जिसके अन्दर नियम हैं, कानून हैं, जिसे पूरी तरह से एक संस्था कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज पूरी दुनिया इनकी उन्नति या इनके सम्मान में एक आवाज़ से बात कर रही है। महिलायें आज गरीमामयी व्यक्तित्व को प्राप्त कर रही हैं, हर क्षेत्र में उन्नति का डंका बजा रही हैं, उनका बोलना, उनका हर परिस्थिति में आगे बढ़ना समाज को भा भी रहा है। ऐसे चमत्कारिक व्यक्तित्व को लेकर आगे बढ़ने वाली, गांव के खेत से लेकर चन्द्रमा तक की दूरी को तय करने वाली तथा भारतीय संस्कृति को अपने दम पर पूर्व जागृत करने वाली माताओं व बेटियों को शत-शत नमन है, जिन्होंने वो कर दिखाया जिसे कोई संकल्प मात्र में भी नहीं सोच सकता। उसका एकमात्र उदाहरण हमारे पास है जिन्होंने सिर्फ कहा नहीं, किया भी, उसका एक अंश अगर दृष्टिगत है तो वो है ब्रह्माकुमारीज़ संस्था, जिसने लगभग 140 देशों में अपनी शक्ति और गरिमा का मानव मन पर अपना परचम लहराया। और विश्व पटल पर एक शक्ति बनकर उभरी।

वर्ष 2020 में हज़ारों कार्यक्रम हुए आयोजित

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने वर्ष 2020 में भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी महिला सशक्तिकरण के लिए हज़ारों कार्यक्रमों का आयोजन बड़े ही उत्साह के साथ किया। जिसका मुख्य उद्देश्य सभी वर्ग की महिलाओं के उत्थान के बारे में चर्चा तथा अमल का विश्लेषण करना था। इन कार्यक्रमों में ऐसा नहीं था कि पुरुष उपस्थित नहीं थे। लेकिन पुरुषों को भी जागृत करने का काम उनको मंच पर लाकर किया ताकि उनको दिखाएं कि हम किस तरह से महिलाओं को सशक्त बना रहे हैं और उन लोगों ने भी इसको बहुत सराहा, कहा कि हम सभी समाज में ज़रूर कार्य करते हैं लेकिन ब्रह्माकुमारी जो कार्य कर रही है वो अति प्रशंसनीय है।

परमात्म ज्ञान से अनुसरित महिलायें

अगर इनकी विशेषताओं की चर्चा करें तो सबसे पहले इनकी विशेषता ये है कि ये स्वयं परमात्मा द्वारा पालना लेकर के पली-बढ़ी हैं। इनका जीवन परमात्मा के अनुभव से ओत-प्रोत है। उसका जीवंत उदाहरण जब ऐसी बहनों के सामने हम जाते हैं तो इनकी विशेषतायें देखकर जैसे आनंद, प्रेम, शान्ति, सहनशीलता, सहजता, सरलता देखकर कोई भी अनुमान लगा सकता है कि इन्होंने किस तरह से पालना ली होगी। ऐसे लगता है मानों भगवान ने इन्हें अपनी गोद में पाला हो और सारी कला सीखा दी हो। जिसमें ये सभी पारंगत होकर औरों को भी उसमें ढालना चाहती हैं ताकि सुसंस्कृत समाज का निर्माण हो।

ये हैं बाल ब्रह्मचारिणीयाँ

जब ब्रह्माकुमारी यज्ञ की स्थापना हुई तो परमात्मा ने 14 साल तक इनसे तपस्या कराई। और इन्होंने तपस्या करके अपने अन्दर एक नये तरीके का नूर विकसित किया जिसमें परमात्मा का भाव नज़र आता था। सिर्फ तन की ही नहीं, तो मन की पवित्रता से

- **ब्रह्माकुमारी संस्था एकमात्र महिला द्वारा संचालित संस्था**
- **सशक्ति करण का आधार पवित्रता**
- **बालब्रह्मचारिणीयों का एक बड़ा जन समूह**
- **यहीं है वो पार्वतीयाँ जिनकी गाई हमने आरतियां**
- **परमात्मा ने इन्हें एक शक्ति बनाया**
- **ये वो ब्रह्मा की बेटियां हैं जिन्होंने जग को थामा**
- **इन्हीं का होता जगराता है**

भरपूर सारी दुनिया में पवित्रता की खुशबू फैलाने वाली ये बाल ब्रह्मचारिणीयाँ अपना एक अस्तित्व स्थापित करने में सक्षम रूप से कार्यान्वित हैं। सारे विश्व के कल्याण के लिये इनका अपना अलग व प्रभावशाली व्यक्तित्व, इन सभी बाल ब्रह्मचारिणीयों के पवित्र जीवन में चार चाँद लगा देता है।

क्या सच में सशक्त हैं हम?

महिला सशक्तिकरण दिवस पर महिलाओं द्वारा कार्यक्रम तो होते हैं, परन्तु अधिकतर देखा गया है कि जब चर्चा होती है तो उनकी बाहरी प्राप्तियों को देखकर, पद-पॉजिशन को देखकर चर्चा होती रहती है कि इन्होंने ये-ये काम किया। लेकिन जब हम उनके मन को टटोलते हैं तो एक बहुत बड़ा गुबार होता है। वो जब फूटता है तो तहलका मचा देता है। आपने मुझे ये दिया, ये दिया लेकिन कभी टटोला कि मेरे मन के अन्दर क्या चल रहा है? एक पुरुष एक नारी को शॉपिंग करा सकता है, उसे बाहर घूमा सकता है, उसे आउटिंग पर ले जा सकता है लेकिन कभी भी बैठकर स्त्री के मन को टटोला कि किस तरह के मलाल हैं। अगर हम उनके मन को शक्तिशाली बना दें तो तब हम कहेंगे कि हम सशक्त हैं। ऐसे हम सशक्तिकरण की बात कैसे कर सकते हैं? इसीलिए महिलाएं कभी-कभी अशक्त हो जाती हैं। हमारा समाज कई बार अनदेखा कर इन्हें प्रताड़ित करता है।

कई बार इन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि कुछ इनमें छोटी हैं, जिन्हें समाज वर्ग से अपमान का सामना करना पड़ता है। परन्तु इन सबका इन ब्रह्माकुमारियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे सशक्तिकरण का संदेश अपने जीवन के द्वारा खुद को शक्ति बनकर देने का कार्य कर रही हैं।

भारत तथा विश्व में महिलाओं को ऊँचा उठाने की अपनी-अपनी कहानी...!

सामान्य तौर पर महिलाओं को कमज़ोरी की निशानी माना जाता है। यदि कोई पुरुष प्रधान समाज के नियमों का विरोध करने का साहस करती है तो उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हुये देखा गया है ताकि वो सशक्त बनने के काबिल ना रहे, ऐसा समाज का एक आइना या एक वर्ग है जो बातें बड़ी-बड़ी करता है लेकिन पढ़े-लिखे लोगों के यहाँ भी देखा गया है कि वो अपने घर की स्त्रियों को प्रताड़ित करते रहे। हम ये नहीं कह रहे है कि सभी ऐसे हैं लेकिन कुछ लोग हैं जो इस तरह की प्रवृत्ति वाले हैं।

परन्तु इन ब्रह्माकुमारियों को हमने देखा है कि इनकी शक्तियों के आगे इस समाज के हर एक वर्ग के लोग नमन करते हैं, सम्मान है उनका। इनकी हरेक क्षेत्र में काम करने की अपनी एक अनुठी कला है, जिसमें परिवारों को प्रेम से जोड़कर, मिलजुलकर, बांधकर जीवन जीने की कला सिखाने का अलग योगदान है। ये ब्रह्माकुमारियाँ महिलाओं को अपने-अपने परिवारों को प्रेम से चलाने का गुर सिखाती हैं, भले ही वो ब्रह्मचारिणी हों पर खुशहाल और सुखी परिवार बनाने का राज़ इनसे अच्छा कोई नहीं जानता। आज सारे विश्व में कई सारे टूटते परिवार इनके द्वारा जुड़ते हुये नज़र आते हैं।

रायपुर-छ.ग.। महिला दिवस पर आयोजित सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सविता दीदी, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. अरुणा पल्टा, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी, पं.ज.ला.नेहरू शासकीय मेडिकल कॉलेज की डीन डॉ. आभा सिंह तथा ब्र.कु. अदिति।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'महिला सशक्तिकरण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में एम.सी. अनु मेहता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज।

इंदौर-म.प्र.। वुमेंस प्रेस क्लब,म.प्र. के द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में विशेष कार्यों के लिए ब्र.कु. हेमलता दीदी को 'अचीवर अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार वेद प्रताप वैदिक। साथ हैं प्रेस क्लब की अध्यक्षा शीतल राय, जनसम्पर्क राज्य मंत्री पी.सी. शर्मा, दिल्ली बी.बी.सी. चैनल की एंकर सारिका सिंह तथा वरिष्ठ पत्रकार प्रो. कमल दीक्षित।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 8

ईश्वर व उसकी हर रचना से क्षमा मांगकर पुण्य का खाता बढ़ाएं

आज हम सभी जानते हैं कि दुनिया भर में एक कोरोना वायरस की महामारी किस तरह से फैलती जा रही है और भारत में भी धीरे-धीरे आंकडे बढ़ते जा रहे हैं। भले ही दुनिया के हर देश की सरकार, हर कोई प्रयत्नशील है कि इस बीमारी को कैसे रोका जाये, लेकिन कोई भी आपदा जब जीवन में आती है महामारी के रूप में, जब मनुष्य जीवन पर आक्रमण होता है तो हर कोई यही कहता है कि ये मनुष्य के बुरे कर्मों का ही परिणाम है और इसीलिए अब उसका दुःख भोगने का समय आया है। परन्तु मनुष्य ये जो दुःख भोग रहा है इसका मतलब ही ये हुआ कि जाने-अनजाने में मनुष्य ने किसी न किसी रूप से प्रकृति को, पशु-पक्षियों को, जीव-जन्तुओं को, कीटाणुओं को किसी न किसी रीति से परेशान किया है, मनुष्य ने उनका शोषण किया है। अपनी आसक्ति के कारण या अपनी लोभ वृत्तियों के कारण प्रकृति का भी शोषण किया, पशु-पक्षियों का, जीव-जन्तुओं का, कीटाणुओं का हर रीति से नाश भी किया, दुःख भी दिया है इसीलिए अब ये सारे "जो मनुष्य ने जाने-अनजाने में, दुःख-दर्द देने का जो कार्य किया है वो कर्म सिद्धान्त के हिसाब से वापस आना भी ज़रूर है" और इसीलिए एक महामारी के रूप में सारे विश्व की आत्मायें उससे आज भयभीत हो रही हैं। ऐसे समय पर हम क्या कर सकते हैं, कर्म सिद्धान्त के हिसाब से यही कहेंगे कि यही समय है क्षमा मांगने का। तो आइये प्रकृति से, पशु-पक्षियों से, जीव-जन्तुओं से, कीटाणुओं से अनेक मनुष्यों से क्षमा मांगे। जिन्हें हमने दुःख देने का कार्य किया है उसके लिए क्षमा, भावना उनसे

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मनुष्य ये जो दुःख भोग रहा है इसका मतलब ही ये हुआ कि जाने-अनजाने में मनुष्य ने किसी न किसी रूप से प्रकृति को, पशु-पक्षियों को, जीव-जन्तुओं को, कीटाणुओं को किसी न किसी रीति से परेशान किया है, मनुष्य ने उनका शोषण किया है।

मांगे। ये क्षमा मांगने का कार्य अति उत्तम है। निर्माणता से जब हम क्षमा माँगते हैं तो क्षमा देने के लिए कोई भी सहज ही अपने हाथ आगे बढ़ाते हैं, प्रकृति से भी क्षमा मांगे क्योंकि प्रकृति का भी शोषण हमने किया है, पशु-पक्षियों का भी शोषण किया है या अपनी जिह्वा की लालसा के लिए मनुष्य ने कितने पशु-पक्षियों को मारा है। तो आज सभी प्राणी मात्र से, हर आत्मा से हम क्षमा मांगते हैंद्ध चाहे प्रार्थना के रूप में उनसे क्षमा मांगे, चाहे मेडिटेशन के माध्यम से उनसे क्षमा मांगे, या किसी भी तरीके से अभी प्रायश्चित करने का समय आया है और इसीलिए दिल से जब तक हम इन सबसे क्षमा नहीं मांगेंगे तब तक ये हमें क्षमा नहीं करेंगे। और तब तक दुनिया से ये महामारी जाने का नाम नहीं लेगी। इसीलिए मेडिटेशन के माध्यम से हम सभी को कुछ क्षण के लिए परमेश्वर की याद में मन को एकाग्र करना है और जैसे-जैसे अपने मन को परमात्मा के सानिध्य में ले जाते हैं, स्वयं को आत्मनिश्चय करते हुए अंतर चक्षु से परमात्मा के सानिध्य में स्वयं को देखना है। इसके लिए विधि ये है कि सबसे पहले हमें परमेश्वर से क्षमा मांगनी है कि "हे प्रभु! जाने-अनजाने में हमने जो आपकी रचना को दुख-दर्द पहुँचाया है। आपसे आज हम क्षमा मांगते हैं, साथ ही साथ आपको साक्षी रखते हुए हर प्राणी मात्र से, प्रकृति से भी हम क्षमा मांगते हैं। दिल की गहराइयों से, अंतरमन से हम क्षमा मांगते है, कोई भी जन्म में, किसी भी तरीके से हमने आपको दुःख-दर्द पहुँचाया हो या आपके प्राण हरे हों आज हम मनुष्यात्मायें आपसे क्षमा मांगते हुए, अपने निर्मल भाव से यही दृढ़ संकल्प करते हैं कि आगे से सात्विक जीवन जीते हुए हम आपको भी जीने का अधिकार देंगे।

यह जीवन है

कभी किसी के चेहरे से ज़्यादा बल्कि उसके मन को देखिए, क्योंकि अगर सफेद रंग में वफा होती तो नमक ज़ख्मों की दवा होती।

जैसे-जैसे नाम आपका ऊंचा होता है वैसे-वैसे शांत रहना सीखिए, क्योंकि आवाज़ हमेशा सिक्के ही करते हैं, नोटों को कभी बजते नहीं देखा!

सिक्के खनखनाते हैं और नोट चुप रहते हैं। इसीलिए अगर जीवन में ऊँचा उठना हो तो शान्त और नम्र रहना सीखें।

लोगों की आलोचनाओं से कभी भी रास्ते मत बदलना, क्योंकि सफलता कभी भी शर्म से नहीं, साहस से मिलेगी।

कोरोना बीमारी के बारे में बन रहे भय के माहौल से डिप्रेशन का खतरा

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हमें यह याद रखना चाहिए कि जानकारी से ही हमारे विचार बन रहे हैं। अगर हम लगातार एक ही जानकारी लेते रहे तो हमारा भय बढ़ जाएगा। कोरोना वायरस के दौर में हमें ध्यान रखने की जानकारी लेनी है, न कि इससे होने वाले नुकसान की। कोरोना के बारे में जानने के लिए हम दिन में 15 मिनट भी समाचार सुनेंगे तो हमें पता लग जाएगा कि दुनिया में क्या हो रहा है। लेकिन अगर हर 15 मिनट के बाद कोरोना के बारे में सुनेंगे, उसका विजुअल देखेंगे और फिर उसके ही बारे में सोचेंगे, फिर अगले एक घंटे तक उसके ही बारे में बात करेंगे तो पूरी ऊर्जा सिर्फ बीमारी, मृत्यु, आतंकित और चिंता करने वाली हो जाएगी। अगर हमने लगातार वही देखा, वही पढ़ा, वही मैसेज चार बार सुन लिए। फिर सिर्फ सुना और पढ़ा ही नहीं, औरों को भी सुनाया। औरों को भी भेजा। इससे तो हम, लोगों के मन में डर और चिंता को कई गुना बढ़ा रहे हैं। वो वायरस इतना डर और चिंता पैदा नहीं कर रहा है, जितना ये मैसेजेज एक-दूसरे को भेजने से पैदा हो रहा है। सूचना का यह आदान-प्रदान हमारे मन पर प्रभाव डाल रहा है और हमारा मन हमारे शरीर को प्रभावित कर रहा है। जब हमारा मन और शरीर दोनों कमज़ोर हो जाएंगे तो हमारे ऊपर उस बीमारी के होने की सम्भावना बढ़ जाती है। जब हम इतनी सारी सावधानियां एक-दूसरे को सुना रहे हैं, शेयर कर रहे हैं तो सबसे बड़ी सावधानी तो ये होनी चाहिए कि हमें इससे सम्बन्धित किसी को मैसेज न भेजना है और न ही सुनना है। डॉक्टर ने हमें जो बताना है, सरकार ने हमें जो बताना है वो एक छोटे से नोट में आ जाएगा। उसके लिए इतने सारे वीडियो, इतने सारे मैसेजेज, इतने सारे डेटा को जानने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार की जानकारी से बचाव नहीं होता, बल्कि रिस्क फैक्टर और ज़्यादा बढ़ जाता है। हमें लगता है कि भय क्या कर सकता है, भय होना तो नैचुरल है। जबकि भय हमारे भावनात्मक स्वास्थ्य को कमज़ोर कर रहा है। थोड़ी देर का भय प्राकृतिक है, लेकिन यहाँ तो स्थायी हो गया ना।

माना हम गाड़ी में कहीं जा रहे हैं अचानक सामने से एक गाड़ी आती है, तो थोड़ी देर के लिए हमें डर लगता है कि कहीं एक्सीडेंट न हो जाए। लेकिन ये भय कितनी देर का होता है, पाँच मिनट, ज़्यादा से ज़्यादा वो आपके मन पर एक घंटा और रह जाएगा या एक दिन आप उसे नहीं भूलेंगे। लेकिन, यहाँ तो हमें कोई भूलने ही नहीं दे रहा है। आप इस वायरस को थोड़ी देर के लिए भूलने की कोशिश भी करते हैं तो दस मिनट के बाद कोई न कोई बहुत ही प्यार से आपको याद दिला ही देता है। किसी चीज़ के बारे में अगर हम सिर्फ वही सोचेंगे और वही बोलेंगे तो वो तो हमारे मन में बैठ जाएगा। पिछले एक महीने से हम भय, चिंता, तनाव से डर-डरकर ही तो जी रहे हैं। जब ये स्थायी हो जाएगा तो इसका सीधा असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ेगा। डब्ल्यू.एच.ओ. ने बताया है कि औसतन चार-पाँच लोगों में से हर एक को डिप्रेशन के लक्षण हैं या डिप्रेशन होने की आशंका है। ये महामारी से पहले के आंकड़े हैं। अब अचानक से ये परिस्थिति आई और हमने पूरे विश्व में भय और चिंता को नॉर्मल कर दिया। क्या हम एक मिनट बैठकर कल्पना कर सकते हैं कि जब यह डर बढ़ेगा तो जिन चार लोगों में डिप्रेशन के लक्षण नहीं थे, उनमें से भी एक लक्षण वालों में शामिल हो सकता है। इसका मतलब है जब इतना डर और चिंता स्थायी होगी तो हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर इसका बहुत बड़ा असर आने वाला है।

हम एक वायरस से बचने के बारे में तो सोच रहे हैं, लेकिन सोचने का तरीका इतना गलत है कि हम एक और महामारी खड़ी कर देंगे। ये वायरस निश्चित तौर पर खत्म हो जाएगा। अधिकांश लोग ठीक हो रहे हैं तो हम सब भी धीरे-धीरे ठीक हो जाएंगे। लेकिन अगर हमारे डराने से किसी को डिप्रेशन हो जाता है तो भले ही वायरस एक-दो महीने में खत्म हो जाए, लेकिन डिप्रेशन खत्म नहीं होगा, क्योंकि यह हमारे मन के अन्दर घूम रहा है। इसलिए हमें विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। अगर हम इसके बारे में इतना डर का और चिंता का महौल बनाएंगे तो जितने लोगों को डिप्रेशन है वो बढ़ जाएगा। जिनको नहीं है, उनको भी होने की सम्भावनाएं बढ़ जाएंगी। वायरस खत्म हो जाएगा, डिप्रेशन महीने में नहीं जाएगा। शायद कईयों के लिए तो जीवन का हिस्सा बन जाएगा। तो एक चीज़ का ध्यान रखना है कि उसके डर से सारे जीवन में हम मुश्किलें नहीं ला सकते। इसके लिए हमें अपनी सोच पर ध्यान रखना ही पड़ेगा कि हमारी इमोशनल हेल्थ का हमारी मेंटल हेल्थ पर सीधा असर पड़ता है। कितने आंकड़े हैं देश में और विश्व में, जिनको हाई ब्लड प्रेशर हृदय रोग, कैंसर या डायबिटीज है। क्या हम कल्पना कर सकते हैं इस डर का इन बीमारियों पर क्या असर पड़ेगा?

ख्यालों के आईने में...

जब ईश्वर ने एक पेड़ के दो पत्ते भी एक जैसे नहीं बनाए, हर पत्ते की अपनी मौलिकता है। इसी प्रकार दूसरों को देखकर उनसे अपनी तुलना करने की बजाए अपनी मौलिकता पर ध्यान दें। इसी में आपके जीवन का असली आनन्द, शक्ति और संतुष्टि समाई हुई है।

सम्मान हमेशा समय और स्थिति का होता है, पर इंसान उसे अपना समझ कर भूल कर लेता है... हम कड़वी गोली को जल्दी से गटक जाते हैं परन्तु मीठी चॉकलेट को खूब चबाकर खाते हैं, इसी तरह जीवन में बुरे समय को जल्दी भूलें और अच्छे समय का खूब आनन्द उठायें।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 9

गर्मियों में पेट दुरुस्त रखते हैं ये घरेलू मसाले

गर्मियाँ शुरू होते ही अपच और उल्टी होना आम बात है। चिलचिलाती धूप से बचने के लिए अक्सर हम बोतल बंद शीतल पेय का सहारा लेते हैं। मगर ये सिर्फ कुछ देर के लिए ही राहत पहुँचाते हैं। प्राचीन समय में आजकल की तरह बिकने वाले शीतल पेय का नामोनिशान नहीं था। फिर भी लोग स्वस्थ जीवन जीते थे। कारण सिर्फ इतना था कि वे प्राकृतिक पेय का उपयोग करते थे। ज़्यादातर भारतीय रसोईघर में कई प्राकृतिक औषध उपलब्ध होते हैं। इनका इस्तेमाल प्राचीन समय से दवाइयों के रूप में किया जाता है। इन औषध के जूस को सब्जियों में डाला जाता है ताकि पाचन तंत्र सही रह सके। ऐसे ही कुछ प्राकृतिक औषध को अपने किचन में ज़रूर जगह दें ताकि इन गर्मियों में अपना पाचन तंत्र आपको परेशान न करे।

स्वास्थ्य

पुदीना : प्राचीन पाचकों में पुदीना ऐसा औषध है जिसका प्रयोग कई भारतीय व्यंजन में किया जाता है। पुदीने में कई गुण मौजूद हैं, जो हमें स्वस्थ रखते हैं। पुदीने को अदरक और नमक के साथ मिलाकर खाने से आपके भोजन का स्वाद बेहतर हो सकता है। यह गर्मी में उल्टी या मितली से भी राहत देता है। सब्जियों पर पुदीने को बारीक काटकर डालें। यह पाचन क्रिया को दुरूस्त करता है। गैस की समस्या भी दूर करने में पुदीना कारगर है। पुदीने की चटनी खाने से लगातार आ रही हिचकी में आराम मिलता है।

अजमोद (पार्सले) : गर्मियों में ज़्यादातर पेशाब में समस्या और संक्रमण आम बात है। ऐसी स्थिति में यह हर्ब संक्रमण रोकने में मदद करता है। यह गुर्दे में एसिड को संतुलित रखता है जिससे शरीर में सूजन और पानी जमा नहीं होता। यह हर्ब गुर्दे में पथरी बनने से भी रोकता है। पेशाब के प्रवाह को सामान्य बनाकर गुर्दे की रक्षा करता है।

तुलसी : तुलसी का पौधा हर भारतीय के घर में मिल जाता है। वैसे भी तुलसी का प्रयोग बेहद शुभ माना जाता है। पूजा-पाठ में काम आने वाली तुलसी सेहत के लिए अच्छी है। यह आपके सब्जियों के रस को और भी फायदेमंद बनाती है। तुलसी का पत्ता खाली पेट लेना बेहद फायदेमंद है। खासकर तब जब इसे नींबू और अदरक के साथ लिया जाए। यह पाचन क्रिया को दुरूस्त कर कब्ज में भी राहत देता है।

घृत कुमारी (एलोवेरा) : गर्मियों में चिलचिलाती धूप हमारी त्वचा को नुकसान पहुँचाती है। साथ में रैशेज भी हो जाते हैं। घृत कुमारी रस त्वचा पर लगाने से रैशेज में आराम मिलता है और यह त्वचा का तेजी से पुनर्निर्माण करता है। घृतकुमारी का रस आंतों और यकृत के लिए भी बेहद फायदेमंद है। यह शरीर के विषैले पदार्थ को बाहर निकालता है और पाचन क्रिया को भी दुरुस्त बनाता है।

दुग्ध रोम (मिल्क-थीस्ल) : यह यकृत को स्वस्थ रखता है और खून को साफ रखने में मदद करता है। इसके सूखे पत्ते पेट के कीड़ों को दूर करता है। ज़्यादा शराब का सेवन करने वालों को अक्सर यकृत की समस्या होती है। ऐसे में यह औषध फायदेमंद है। बहुत ज़्यादा दर्द निवारक दवाइयों का इस्तेमाल करने वाले लोग इस हर्ब के साथ घृतकुमारी के रस का इस्तेमाल कर सकते हैं, अपने यकृत को स्वस्थ रखने के लिए।

हल्दी : हल्दी हर घर में रोज़मर्रा के खाने में इस्तेमाल होती है। हड्डियों की समस्या और जोड़ों के दर्द से बचाती है। अगर आप हल्दी को दवा की तरह इस्तेमाल करना चाहते हैं तो कच्ची हल्दी का टुकड़ा पीस कर दूध में मिलाकर रात में पीएं।

सहरसा-बिहार। 84वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. रानी दीदी, डी.डी.सी. राजेश कुमार सिंह, फैमिली जज रविन्द्र कुमार त्रिपाठी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्नेहा, ब्र.कु. कृष्ण,समस्तीपुर तथा अन्य।

नीमरना-राज.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में उपस्थित हैं बायें से कावेरी खण्डेलवाल, रुक्मणि कौशिक,कांग्रेस महिला स्टेट सेक्रेट्री, के.जी. कौशिक,सेक्रेट्री,एन.आई.ए., ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. सुषमा दीदी।

दिल्ली-वसंत कुंज। महाशिवरात्रि के अवसर पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनीता,आर.के.पुरम। साथ हैं श्रीमति अवस्थी,आर.डब्ल्यू.ए., अतुल रस्तोगी,पूर्व डायरेक्टर,टी.सी.आई.एल., प्रो. श्रीवास्तव, श्रीमति स्वर्णा वैद्य तथा अन्य।

कथा सरिता...

निमित्त होने का घमंड कैसा?

एक लकड़हारा रात-दिन लकड़ियां काटता, मगर कठोर परिश्रम के बावजूद उसे आधा पेट ही भोजन मिल पाता था। एक दिन उसकी मुलाकात एक साधु से हुई। लकड़हारे ने साधु से कहा कि जब भी आपकी प्रभु से मुलाकात हो तो, मेरी फरियाद उनके सामने रखना और मेरे कष्ट का कारण पूछना। कुछ दिनों बाद उसे वह साधु मिला। लकड़हारे ने उसे अपनी फरियाद की याद दिलाई तो साधु ने कहा कि प्रभु ने बताया है कि लकड़हारे की आयु 60 वर्ष है और उसके भाग्य में पूरे जीवन के लिए सिर्फ पाँच बोरी अनाज है। समय बीता। साधु उस लकड़हारे को फिर मिला तो लकड़हारे ने कहा, "ऋषिवर! अब जब भी आपकी प्रभु से बात हो तो मेरी यह फरियाद उन तक पहुँचा देना कि वह मेरे जीवन का सारा अनाज एक साथ दे दें। ताकि कम से कम एक दिन तो मैं भरपेट भोजन कर सकूँ।"

अगले दिन साधु ने कुछ ऐसा किया कि लकड़हारे के घर ढ़ेर सारा अनाज पहुँच गया। लकड़हारे ने समझा कि प्रभु ने उसकी फरियाद कबूल कर उसे उसका सारा हिस्सा भेज दिया है। उसने बिना कल की चिंता किए, सारे अनाज का भोजन बनाकर फकीरों और भूखों को खिला दिया और खुद भी भरपेट खाया। लेकिन अगली सुबह उठने पर उसने देखा कि उतना ही अनाज उसके घर फिर पहुँच गया है। उसने फिर गरीबों को खिला दिया। फिर उसका भंडारा भर गया। यह सिलसिला रोज़-रोज़ चल पड़ा और लकड़हारा लकड़ियां काटने की जगह गरीबों को खाना खिलाने में व्यस्त रहने लगा। कुछ दिन बाद वह साधु फिर लकड़हारे को मिला तो लकड़हारे ने कहा, "ऋषिवर! आप तो कहते थे कि मेरे जीवन में सिर्फ पाँच बोरी अनाज है, लेकिन अब तो हर दिन मेरे घर पाँच बोरी अनाज आ जाता है।" साधु ने समझाया, "तुमने अपने जीवन की परवाह ना करते हुए अपने हिस्से का अनाज गरीब व भूखों को खिला दिया। इसीलिए प्रभु अब उन गरीबों के हिस्से का अनाज तुम्हें दे रहे हैं।"

राजकोट-पडधारी(गुज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. भारती दीदी, मामलतदार भावना विरोज़ा, तालुका पी.एस.आई. किरण जडेजा, जिगना परमार,ग्राम सरपंच, ब्र.कु. जिगनाशा,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

अहमदाबाद-ईसनपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'वर्तमान परिवेश में नारी शक्ति की विशेष भूमिका' विषयक महिला सेमिनार में दीप प्रज्वलन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. नेहा,उपक्षेत्रीय संचालिका,मणिनगर, ब्र.कु. जागृति,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, रश्मि मेहता, कारोबारी सभ्य,अखिल हिंदु महिला परिषद्, स्मिता जोशी,सभ्य भारत विकास परिषद्, ब्र.कु. डॉ. मुकेश पटेल तथा संगीता पटेल,संयोजिका भारत विकास परिषद्,महिला पंख।

रीवा-म.प्र.। महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. निर्मला, जिला पंचायत उपाध्यक्ष विभा पटेल, महिला कांग्रेस कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष कविता पाण्डेय, महिला प्रकोष्ठ पुलिस उपनिरीक्षक प्रियंका पाठक तथा अन्य प्रतिष्ठित महिलायें।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-12(2019-2020)

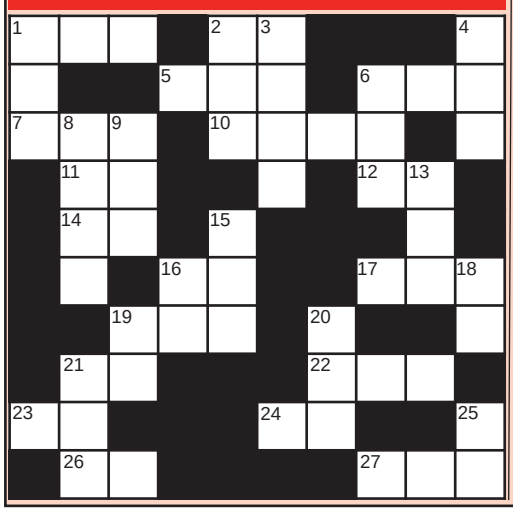

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

ऊपर से नीचे

1. असर, छाप (3)
2. अशुद्ध, अपवित्र (3)
3. व्यायाम, मेहनत, परिश्रम (4)
4. बहुत जल्दी बाबा की...जाने वाली है(3)
6. दलदल, पंक, कीचड़ (3)
8. पुरुषार्थ, प्रयत्न, कर्म (4)
9. मुस्लिमों के पांच कर्म में से एक (3)
13. खिंचाव, चिंता, फिक्र (3)
15. उपहास करना, प्रसन्न होना (3)
16. नमकीन, सागर के जल का स्वाद (2)
18. शरीर, देह (2)
19. फुर्त, जो आलसी न हो (2)
20. जिसका कोई अन्त न हो, अनन्त (3)
21. सहज, सरल (3)
25. ....बनो वरदानी बनो, गुणों के (2)

बाएं से दाएं

1. निपुण, चतुर, उस्ताद (3)
2. नाशिका, मान, इज्जत (2)
5. अनुतीर्ण, असफल (3)
6. दोबारा, पुनरावृत, पुनः (3)
7. ....में बैठकर बाबा ईशारों से (3)
10. कलाकारी, चमत्कार (4)
11. सांस फूलने की बीमारी (2)
12. झुका हुआ, नम्र (2)
14. मूल, एक उच्च स्थिति (2)
16. ....भारत आम सारी दुनिया का उद्धार बाप (2)
17. निमन्त्रण, भोज (3)
19. चोरी करना, छिपाना (3)
21. आलस्य, अलबेला (2)
22. फर्क, भिन्नता (3)
23. सारी सृष्टि में 4....होते हैं (2)
24. समाप्त,...मति सो गति (2)
26. प्रार्थना, सूत्रवाक्य (2)
27. रुहानी और....डॉक्टर का सुनो यह कहना है, शारीरिक (3)

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 10

बेहद सेवा के लिए वरदान

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

हम जब कभी भी ऐसी आत्माओं से मिलने जाते हैं तो एक भाव तो हमेशा होता ही है कि जाके मिलकर आ जाओ। लेकिन जो आत्मायें परमात्मा के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं, जिनका गहरा सम्बन्ध है, उन आत्माओं का एक-दूसरे के साथ इतना अच्छा वायब्रेशन क्रियेट होता है कि आत्मा वहाँ बैठकर वैसे ही भावविभोर हो जाती है। ऐसे ही हमारी दादी थीं। दादी जानकी के पास एक बार मैं मिलने गया, किसी बड़े भ्राता के साथ, वो सेवा पर कहीं जा रहे थे तो छुट्टी लेने के लिए गए थे, जब हम पहुँचे तो थोड़ी देर वो दादी के पास बैठकर दादी को बताने लगे कि दादी हम वहाँ जा रहे हैं और कौन-सी सेवा के लिए जा रहे हैं। मैं दादी के बिल्कुल सामने बैठा हुआ था। दादी बहुत ध्यान से उनसे बात करते हुए मेरी तरफ देख रही थीं। और देखते हुए कहा कि आप अकेले जा रहे हैं? तो कहा दादी नहीं ये भी साथ जा रहे हैं। तो दादी बोली कि हाँ इसको ज़रूर साथ लेकर जाना। उस समय वहाँ कुछ भाई खड़े थे, उस समय तो हमें कोई एहसास नहीं हुआ दादी ने बोला और हमने भी उसे कैजुअल अप्रोच के साथ लिया। इतना एहसास नहीं था। लेकिन दादी का वो कहना धीरे-धीरे हम दोनों आगे गए और जहाँ भी सेवा के लिए गए तो देखा कि कैसे धीरे-धीरे सेवा का पार्ट खुला। बाहर जाने का, बेहद में अपनी सेवा देने का पार्ट क्या होता है। जब ये बात वो भाई हमसे शेयर कर रहे थे तो कह रहे थे कि दादी के मुख से कुछ भी ऐसा निकला हो और वो सही ना हो ये हो नहीं सकता। दादी वरदानीमूर्त हैं। उन्होंने आपको वरदान दे दिया माना दे दिया। तो ऐसी आत्मायें शायद हम सबको उतनी परख ना हो लेकिन जिन्होंने पूरा जीवन ही तपस्या में बिताया हो उनके मुख से कुछ भी निकलेगा तो वो हमारे लिए एक वरदान ही साबित होगा। इसी तरह जब भी हम कभी भी उनसे मिलने जाते थे तो दादी का जो भाव होता था, वो भाव एक वायब्रेशन के रूप में हमें फील होता था।

कहा जाता है कि दुनिया में अगर कोई योगी आत्मा जो इस धरती पर अपनी तपस्या के बल से इतना ज़्यादा पुण्य कमाया हो तो उसके मुख से निकली हुई हरेक बात आपके लिए सार्थक हो जाती है। इसीलिए हम ये नहीं कह रहे हैं कि ये एक दिन में आ गया समझ, लेकिन ये जब प्रैक्टिकल में हमारे साथ हुआ तो पता चला कि सच में उनके मुख से निकली हुई हरेक बात वरदान के रूप में सिद्ध हो जाती है। ऐसी महान विभूति का एक शब्द हमारे जीवन को बदल सकता है।

जब मेरे पिता जी ने शरीर छोड़ा और उसके बाद मैं दादी से मिलने गया तो दादी ने बड़े ध्यान से फिर से निहारा, प्यार से देखा उस दिन मैं मधुबन में था। मेरे पिता जी ने गाँव में शरीर छोड़ा था तो वहाँ से फोन आया था। वो सुनकर मैं दादी के पास गया था। तो दादी ने बड़े प्यार से दृष्टि दी और ये बात कही कि आपको कोई तकलीफ तो नहीं है? मैंने कहा नहीं दादी कोई तकलीफ नहीं है। तो दादी ने फिर थोड़ी बहुत गहरी अच्छी बातें सुनायीं जोकि हमारे मन को तसल्ली दे रही थी। कहतीं कि ये तो कुछ नहीं ये तो आना-जाना बना हुआ है। हम बाबा के सभी बच्चों का मन हमेशा अच्छा रहना चाहिए। फिर दादी ने बड़े ध्यान से देखा बैज की तरफ और उस समय उस दिन हमारा एक नया गोल्डन मोमेंट था। वो गोल्डन मोमेंट गोल्डन बैज के रूप में बदल गया। और दादी ने उस दिन विशेष रूप से एक सौगात हमें प्रदान की। तो ऐसे कुछ बहुत बड़े अनुभव तो नहीं लेकिन ऐसे कुछ अनुभव जुड़ गये दादी से कि कभी भी उनके पास चाहे वो इस समय हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन ज्ञान और योग के आधार से देखा जाये तो हमारे बीच में ही हैं। हम सभी उनकी प्रज्ञा को, उनकी स्थिति को ऐसे देखकर जान सकते हैं कि कितनी पॉवरफुल सॉल रहीं। इस उम्र में भी जब वो कभी मुरली पढ़तीं तो भले थोड़ी बहुत आवाज़ में लड़खड़ाहट होती थी लेकिन वो फिर भी हमको समझ में आ जाता था कि दादी क्या कहना चाहती हैं। तो कहा जाता है जब हमारी इन्द्रियां भी हमारा साथ नहीं दे रहीं लेकिन फिर भी वो हमको समझ में आ जाये तो सोचो कितनी तपस्या की होगी इन इन्द्रियों के ऊपर। ऐसी महान विभूति, ऐसी महान शक्तिशाली आत्माओं के साथ जितने भी पल, जितने भी क्षण हमने बिताये वो एक इतिहास बन गया। और आज भी वो हमारे ज़हन में तरोताज़ा है। हमें तो कभी नहीं लगता कि दादी हमारे बीच से गई हैं। हाँ ये ज़रूर है दादी हमें सिखाकर बहुत कुछ गई।

हम सब भी अगर दादी को सच्चा श्रद्धासुमन अर्पित करना चाहते हैं तो उनकी तरह एक महान तपस्वी, महान योगी बनकर दिखायें। और परमात्मा के साथ गहरा कनेक्शन रखें। विदेही बनें। अपने आपको उस अवस्था में ले जायें जैसे दादी थीं। ऐसी महान विभूति, ऐसी महान आत्मा, ऐसी प्रखर प्रज्ञा, ऐसी शक्तिशाली आत्मा को आओ हम सभी अपनी तरफ से भी बहुत भावभीनी श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। दादी जहाँ भी होंगी बेहद सेवा में होंगी। ऐसी दादी को शत-शत नमन।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

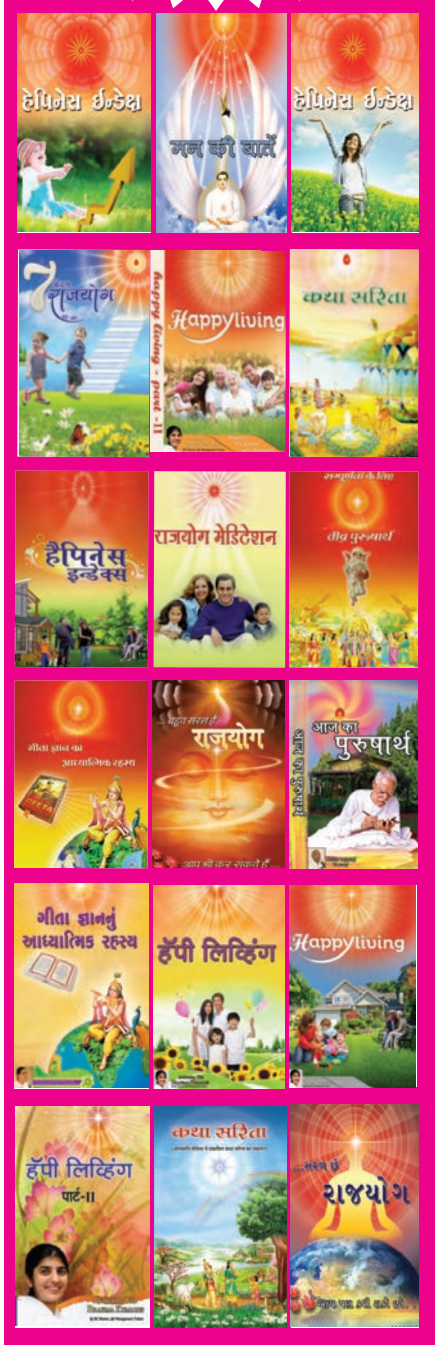

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम श्वेता है। अगर कोई भी कर्म करते समय मेरा इंटेंशन बहुत ही अच्छा है लेकिन फिर भी सामने वाला व्यक्ति हर्ट होता है तो क्या इससे भी कर्मों का बुरा फल मुझे प्राप्त होगा?

उत्तर : हाँ ये कुछ ऐसी बात है जो अनेकों के सामने आती है। इरादा तो बहुत अच्छा है लेकिन कुछ शब्द ऐसे बोल दिए गए जिससे व्यवहार ऐसा हो गया जिससे फिर दूसरे व्यक्ति को कष्ट होने लगा। हमारी मंसा उन्हें हर्ट करने की बिल्कुल नहीं थी। लेकिन ऐसा होने लगता है। तो निश्चित रूप से कर्मों का खाता तो बनता है। पहली चीज़ हमारा बोलने का तरीका बहुत सम्मान युक्त होना चाहिए। अगर वो आपकी फ्रेंड है तो मनमुटाव तो हो ही जायेगा। फिर आप चाहे कितना भी उन्हें कह लें कि मेरे मुख से से निकल गया, मेरा ऐसा इंटेंशन नहीं था, मुझे माफ कर दो तब भी वो मानेंगी नहीं। इसीलिए हम ऐसी पॉजिटिव भाषा बोलें जिससे वो दूसरे को अप्रिय न लगे। कभी-कभी ऐसा होता है कि हम एक अच्छी बात कह रहे हैं लेकिन अच्छे शब्दों में नहीं कह रहे, अच्छे मूड में नहीं कह रहे तो दूसरे को हर्ट होता है। और कभी-कभी हम उसको शिक्षा दे रहे हैं बहुत अच्छी, जो उसको प्रिय लगेगी क्योंकि हमारा तरीका इतना सुन्दर है कि वो व्यक्ति उसे स्वीकार कर लेता है। हमसे कोई हर्ट ना हो उसका खास हमें ध्यान रखना ही होगा। उन्हें आत्मा देखकर ही बात करें। और हो सके तो आमने-सामने बैठकर भी बात कर लें और दूसरा उन्हें सवेरे उठकर ये अच्छे संकल्प भी दें कि यू आर माई गुड फ्रेंड। हम सदा के फ्रेंड हैं और सदा रहेंगे।

प्रश्न : मेरा परिवार कुछ समय से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा हुआ है लेकिन मेरे साथ तो कुछ ऐसा हो रहा है कि कुछ लोग मेरे मोबाइल को टैप कर लेते हैं और साथ ही साथ छुपकर मेरे कुछ फोटोज़ भी ले लेते हैं। चाहे वो ऑफिस हो या कहीं और हो। और मेरे चरित्र को ले करके भी वो बातें करते हैं लेकिन मैं बिल्कुल भी ऐसी नहीं हूँ। मैंने अपने परिवार वालों से भी कहा कि उनके खिलाफ कुछ एक्शन लिया जाये लेकिन वो लोग शायद ज़्यादा प्रभावशाली हैं इसलिए वो भी डरते हैं और मना करते रहते हैं और इसी कारण मैं थोड़ी डिप्रैस होती जा रही हूँ। ऐसी कंडीशन में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : व्हट्सअप, मोबाइल ये हैं तो अच्छी चीज़ लेकिन अगर इनका मिसयूज़ हो जाता है तो ऐसा हो जाता है कभी-कभी। आपको पहला ध्यान तो खुद को ही रखना चाहिए। वो उसमें कोई गलत फोटो या गलत चीज़ रखें ही नहीं। और इस अनुमान को भी आप ज़्यादा ना बढ़ायें कि लोग ऐसा-ऐसा कर रहे हैं। क्योंकि जहाँ सत्य है, सत्य में बहुत ही पॉवर होती है। सत्य के वायब्रेशन बहुत ज़्यादा काम करते हैं। लेकिन सत्य कमज़ोर कब पड़ता है जब मनुष्य भयभीत रहता है। जब वो खुद नेगेटिव हो जाता है, जब वो ज़्यादा सोचने लगता है, वो डाउट करने लगता है तो उसके सत्य की शक्ति भी कमज़ोर पड़ जाती है। और अगर मान लो ये सत्य ही है कि लोग ऐसा कर ही रहे हैं तो सवेरे उठकर आप ऐसे लोगों के लिए 15 मिनट योग के वायब्रेशन्स दें और मैं मास्टर ऑलमाइटी हूँ ये सात बार अभ्यास करके उन सबको आत्मा देखकर संकल्प करें कि ये सभी मेरे गुड फ्रेंड हैं, ये सभी मेरे लिए पॉजिटिव हैं। मेरे लिए बहुत कल्याणकारी हैं। आप मुस्कराती रहें। आप बॉल्डली अपना कार्य करें। आपकी बॉल्डनेस के आगे, निर्भयता के आगे लोग परास्त हो जायेंगे ये सोचकर कि इन पर कुछ असर होने वाला नहीं है। ऐसा ही सोचे कि इन सबसे कुछ होने वाला नहीं है। आपके जो अच्छे वायब्रेशन्स होंगे, आपको प्रोटेक्ट करेंगे।

प्रश्न : आपने अपने एक एपिसोड में बताया था कि हमें ग्रहों को भी वायब्रेशन देने हैं क्योंकि ग्रह भी हमसे कुपित होते हैं तो उस मंगल ग्रह को साकाश देना चाहिए। इसकी विधि क्या है, हम कैसे ग्रहों को वायब्रेशन दें, कृपया आप बताइए?

उत्तर : आजकल कुछ लोग इन चीज़ों में विश्वास करते हैं और कुछ नहीं करते हैं। ये प्रकृति का इफेक्ट है। उसका निर्माण मनुष्य के लिए है और ऊपर से जैसी एनर्जी आयेगी उसका इफेक्ट मनुष्य के विचारों पर, उसके भविष्य पर अवश्य पड़ता है। ये तो बड़ी सूक्ष्म विद्या है। और पंडित लोग, ज्योतिषी जी हैं वो भी इनका बहुत अच्छा उपाय करते हैं। लेकिन हमने राजयोग में ये सीखा कि यदि राजयोग में हम इन ग्रहों को प्योर वायब्रेशन्स दें तो काफी हमारे अनुकूल हो जाते हैं, हमारे गुड फ्रेंड हो जाते हैं। तो पहले तो हम इन्हें अपना गुड फ्रेंड मान लें। सवेरे उठकर ऐसे संकल्प करें कि मैं मास्टर ऑलमाइटी हूँ। इस सम्पूर्ण प्रकृति का मालिक हूँ, इस देह का भी मालिक हूँ। और मैं सम्पूर्ण पवित्र भी हूँ। और ये सम्पूर्ण ग्रह और ये सम्पूर्ण प्रकृति मेरी पूरी सहयोगी है। उनको हमारी तरफ से बहुत अच्छे वायब्रेशन्स जाने चाहिए। एक बात थी कि उनसे हमें एनर्जी आ रही है लेकिन कलियुग तक ये सब एनर्जी देते-देते भी इनकी भी पॉवर कम हो जाती है। तो अब हम इन्हें एनर्जी देंगे। जो बहुत अच्छा योग करते हैं वो ही इसको कर सकते हैं। योग की एक अच्छी विधि बता देता हूँ। पहले हम अपने को इस स्वमान में सैट करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, स्वराज्यधिकारी हूँ, मैं पवित्रता की देवी हूँ या देवता हूँ। और इस सम्पूर्ण प्रकृति की मालिक हूँ। इस गुड फीलिंग में आयेंगे। फिर हम योग अभ्यास करें एक परमसत्ता से शक्तियों के वायब्रेशन्स, प्योरिटी के वायब्रेशन्स मुझमें समा रहें हैं। विशेष ये दो चीज़ें प्योरिटी और शक्तियां। फिर अपने को फील करें कि मैं ऊपर हूँ आकाश में और ये नौ ग्रह देव स्वरूप में मेरे सामने खड़े हैं। और मेरे मस्तक से प्योर एनर्जी, पॉवरफुल वायब्रेशन इन सबको जा रहे हैं। चाहे एक-एक को दृष्टि दें या टोटल सब पर फोकस डालते रहें। फिर परमसत्ता से वायब्रेशन लें। फिर आत्मा से इन पर डालें। उसी वायब्रेशन्स के साथ। और संकल्प करें कि ये सब मेरे गुड फ्रेंड हैं। मेरा फेवर करें। आप मुझे अच्छे वायब्रेशन्स भेजें। तो वो भी हमारे बहुत अच्छे मित्र बन जायेंगे। तो उनसे हमें पॉवरफुल एनर्जी आने लगेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की ख़ुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

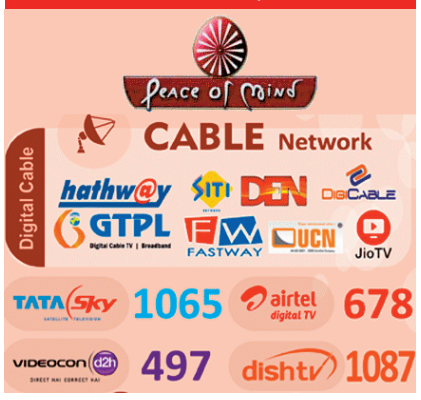

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 11

उपरोक्त विषय अपने प्रकार का अनोखा विषय है, जिसकी आज के प्रसंग में बहुत सख्त ज़रूरत है। क्योंकि यह कालचक्र तो सदा घूमता ही रहता है, समय तो बदलता ही रहता है और परिवर्तन इस भौतिक जगत का

बदलते समय में आध्यात्मिक बुद्धि की आवश्यकता

एक अटल नियम है परन्तु सभी इस बात को मानेंगे कि पिछले 60-70 वर्षों में जिस प्रकार समय बदला है, वैसा पिछले पूरे इतिहास में कभी नहीं बदला। विश्व में अगणित अस्त्रों के निर्माण, मानवीय जनसंख्या में अत्यन्त तीव्र वृद्धि, पर्यावरण में चिन्ताजनक प्रदूषण, फैलती हुई गरीबी और बेरोजगारी जैसी भयावह और जटिल समस्यायें पैदा हो गयी हैं। समाज में अभूतपूर्व नैतिक पतन हुआ है। पारिवारिक सम्बन्धों में स्नेह और सहयोग का अभाव महसूस होता है। मनुष्य के अपने जीवन में भोगवाद दावानल की तरह बढ़ा है और दिनोंदिन मनुष्य अधिक स्वार्थी होता गया है। सारे वातावरण में तनाव की स्थिति है। दान, उदारता तथा आतिथ्य का स्थान निजी संकीर्णता ने ले लिया है और अहिंसा का स्थान घिनौनी हिंसा ने। इन्हीं छह-सात दशकों में प्रायः हरेक के मन में विकृतियाँ बढ़ी हैं और हरेक से ऐसे प्रकम्पन वातावरण में फैल रहे हैं जिनसे सबकी मनोस्थिति में हलचल, चिन्ता, भय, उदासी, अभद्रता इत्यादि ही का रंग बढ़ा है।

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आध्यात्मिक मेधा, सद्विवेक अथवा प्रज्ञा की ज़रूरत

यदि हम गहराई से विचार करें तो हम परिणाम पर पहुँचेंगे कि आज हमारे सामने जो विकराल वैश्विक समस्यायें उपस्थित हैं, उन सभी का हल भौतिक ज्ञान-विज्ञान से तो हो नहीं सकता। उनके प्रयोग से यदि कोई समस्या कुछ काल के लिए थोड़ी हल भी हुई है तो उसके स्थान पर उसी हल के परिणामस्वरूप ही कोई दूसरी समस्या भी उपजी है। उन समस्याओं का अपना मूल कारण भी नैतिकता का ह्रास है। अतः चाहे विश्व की समस्यायें हों, चाहे हमारी निजी अवस्था हो, उन सभी के वास्तविक हल अथवा निराकरण का उपाय तो नैतिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि अथवा प्रज्ञा ही है। आध्यात्मिक प्रज्ञा हमारी बुद्धि की वह

आध्यामिक प्रज्ञा क्या है?

स्थिति, गुणवत्ता अथवा क्षमता है जिससे कि हम झट से किसी बात को ठीक से समझ लेते हैं, व्यक्ति को भाँप लेते हैं, परिस्थिति का अवलोकन कर सकते हैं और होने वाले परिणामों की झलक पा सकते हैं। यह हमारे अभ्यासों तथा शुभ प्रयत्नों का वह फल है जो विकसित होकर हमें यह योग्यता प्रदान करता है कि हमारी मनोस्थिति एकरस बनी रहे और हम निन्दा-स्तुति, घृणा-द्वेष, हानि-लाभ, जय-पराजय और विघ्नों-तूफानों में रहते हुए भी एक निर्विघ्न तथा अचल स्थिति में रह सकें, ठीक निर्णय कर सकें, परिस्थिति का विश्लेषण कर सकें तथा अनेक प्रकार के प्रलोभन, उत्तेजनायें, उकसाहटें सामने आने पर भी हम अपनी नैतिकता में दृढ़ बने रहें। यह बुद्धि की प्रफुल्लित अवस्था है, जिसमें दैवीगुणों का विकास हुआ होता है और मनुष्य भय, चिन्ता तथा दूसरों के दबावों में भी निर्द्वन्द होकर कार्यरत रहता है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति को नकारात्मक विचार नहीं आते और वह किसी का बुरा नहीं सोचता। वह कोरे स्वार्थ से ऊपर उठकर रहता है और भलाई के पथ पर मजबूत कदम से आगे बढ़ता है।

आध्यात्मिक ग्रंथों में आध्यात्मिक प्रज्ञावान मनुष्य की उपमा हंस से की गयी है। जैसे हंस मोती चुगता है और कंकर-पत्थर छोड़ देता है, वैसे ही दिव्य प्रज्ञा वाला व्यक्ति शुभ मनोरथों, भावों और विचारों ही को ले लेता है और व्यर्थ से सदा बचकर रहता है। उसका उत्साह उदम्य होता है। उसकी उपमा कछुए से भी की गयी है। जैसे कछुआ अपना काम करने के बाद अपनी इन्द्रियाँ समेट लेता है और अचल होकर पड़ा रहता है, वैसे ही रूहानियत की बुद्धि वाला व्यक्ति भी कर्म करने के बाद अपने विचारों और कर्मों को समेट लेता है और अपने मन की गुफा में मग्न होकर प्रभु-प्रेम में विलीन होकर, आत्मरस के स्वाद में विभोर होकर आनन्दित होता रहता है। उसका मन ही मानसरोवर होता है। उसका विचार ही गंगाजल होता है और वह उसमें डुबकियाँ लगाते हुए पावन-पुनीत बनकर समाधिस्थ हो जाता है। "ॐ नमः शिवाय, ॐ नमःशिवाय" - इस मंत्र का आलाप करने की उसे आवश्यकता नहीं होती, वह इसके अर्थस्वरूप में स्थित होता है। वह उस परमात्मा रूपी साजन की सजनी बन या उस पिता का पुत्र बन, शिक्षक का शिष्य बन या सखा भाव से द्रवित होकर उसी के संग-संग होता है। वह इस संसार में रहते भी इससे उपराम अथवा न्यारा होता है। परमात्मा रूपी शमा पर वह पतंगे की तरह विचार चक्र लगाता है। जैसे चकोर चाँद को देखकर बेहताशा से ऊपर उसकी ओर उड़ जाता है, वैसे ही उसका चित्त रूपी चकोर उड़कर प्रभु की ओर जाता है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक ने यह भी कहा है कि आत्मिक बुद्धि वाले व्यक्ति के मन में कोई लौकिक कामना व इच्छा नहीं होती। वह जनहित के लिए व सबकी सेवा के लिए, प्रभु के प्रति समर्पित बुद्धि होता है। वह कर्मयोगी होता है अर्थात् उसके हाथ कर्म में प्रवृत्त होने पर भी उसकी बुद्धि योगयुक्त होती है। वह राजा जनक के समान विदेह अवस्था में बना रहता है और कुशलता पूर्वक कर्म करता है। उसके जीवन में खुशी, उत्साह, सेवाभाव सदा बने रहते हैं। दूसरों के दुःख दूर करने के लिए और स्वयं पूर्णता तक पहुँचने के लिए उसका जीवन सादा और स्वभाव में दया, करूणा तथा वृत्ति में त्याग होता है। चूँकि व्यक्तिगत एवं विश्व की सभी समस्यायें हमारी बुद्धि के नैतिकता-रहित, मन के अंकुश-रहित, भावावेगों के मर्यादा-रहित हो जाने के कारण से हैं, इसलिए आज ऐसी बुद्धि अथवा प्रज्ञा की ज़रूरत है। ऐसी बुद्धि होने पर अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, विज्ञान तथा तकनीकी कलाओं तथा संरचनाओं, साहित्य तथा शिक्षा, प्रशासन तथा व्यवस्था, न्याय तथा विधि-विधान सभी को एक नयी दिशा मिलती है। इनमें नया उत्कर्ष होता है।

वडोदरा-अटलादरा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा, डॉ. दृष्टि शाह,फीजियोथैरेपी, मेधावी व्यास,इमेज कंसलटेंट, भाग्यसेतु शर्मा,एम.टी.वी. रोडीज़-पार्टिसिपेंट, सोनाली देसाई,गुजराती टीवी एवं फिल्म अभिनेत्री, वत्सला पाटील,प्रख्यात लोक गायिका, आर.जे. विधी, निशा बहन, बीना बहन तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

कोरापुट-ओडिशा। शिव जयंती के अवसर पर फॉरेस्टर गिरीश सतपथी, फॉरेस्टर सिमांचल पंडा तथा फॉरेस्टर सुधीर बेहेरा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा तथा ब्र.कु. रंजीत।

मानसरोवर-राजापार्क। शिवजयंती के उपलक्ष्य पर ध्वजारोहण से पूर्व ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. पिंकी,मालवीय नगर, ब्र.कु. जया,तारों की कुंट, ब्र.कु. मिथलेश,मिलाप नगर, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. महिपाल, हरि भाई, मूलचंद भाई, लोकेश भाई तथा अन्य।

सिंगापुर-मलेशिया। 84वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित 'शिव दर्शन-पंच भूत स्थलम' कार्यक्रम में शरीक हुए पार्लियामेंट स्पीकर तन चुआन जिन, हिन्दु एन्डॉमेंट बोर्ड के सी.ई.ओ. राजा सागर तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।

अहमदाबाद। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में मंचासीन हैं नेहा के.शाह,सलाहकार समिति,नारी संस्था, डॉ. रिद्धि शुक्ल,सह संस्थापक,नारी संस्था, ब्र.कु. प्रतिभा दीदी,केन्या, ब्र.कु. चंद्रिका दीदी,उपाध्यक्ष,युवा प्रभाग तथा डॉ. दर्शना ठक्कर,स्पर्श फाउण्डेशन।

देहरादून-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मधु शर्मा, चन्द्रा पन्त, कविता बत्रा, ब्र.कु. मंजू, नलिनी गुसाईं तथा उषा कपूर।

सूरतगढ़-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमति कमलेश गुप्ता,चेयरपर्सन,अग्रवाल महिला समिति, श्रीमति पूनम,एडवोकेट, श्रीमति नीलम सांगवान,प्रिन्सीपल, ब्र.कु. रानी,सेवाकेन्द्र संचालिका, श्रीमति पार्वती,कॉन्सटेबल तथा ब्र.कु. साक्षी।

जयपुर-सोडाला(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. ललिता,सीनियर स्पेशलिस्ट,एम.बी.बी.एस.एम.एस, नीलम मित्तल,सीनियर लेक्चरर इन कॉस्ट्यूम डिज़ाइन,गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज, मनीषा माथुर,पी.जी.एम.,बी.एस.एन.एल. टेलीकॉम कंपनी, ब्र.कु. स्नेहा तथा अन्य।

OM - 3 - 2020 DELHI FINAL 1_Page 1 and 2 17/04/2020 10:45 AM Page 12

दादी गुलज़ार शांति उपवन का भव्य उद्घाटन

» पूरे विश्व में शांति के प्रकम्पन फैलाने के निमित्त बनेगा यह स्थल - दादी

'दादी गुलज़ार शांति उपवन' का उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. चक्रधारी तथा अन्य अतिथिगण।

गुरूग्राम-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मानेसर से कुछ ही दूरी पर स्थित दादी गुलज़ार शांति उपवन का उद्घाटन बड़े ही भव्य समारोह के साथ किया गया। इस विशेष अवसर पर संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि ये भूमि दादी गुलज़ार की तपस्या स्थली रही है इसलिए ये हम सभी के लिए परमात्मा का वरदान है। उन्होंने कहा कि यहाँ पर योग साधना का एक ऐसा शक्तिशाली वातावरण बनाना है, जिससे आकर्षित हो कोई भी व्यक्ति यहाँ आकर गहन शान्ति का अनुभव कर सके। दादी ने कहा कि वर्तमान समय विश्व की सभी आत्माओं को केवल मन की शांति की आवश्यकता है, जिसके लिए इस प्रकार के शक्तिशाली स्थान की ज़रूरत है। कार्यक्रम में संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. गीता दीदी, ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी एवं संस्था के अन्य कई वरिष्ठ सदस्यों ने शांति उपवन के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में दिल्ली एवं एन.सी.आर. से बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने शिरकत की।

क्या है खासियत

» 4 एकड़ भूमि पर बना है यह उपवन

» लम्बे काल तक दादी गुलज़ार ने एकांत में रहकर योग-तपस्या द्वारा इस स्थान को बनाया शक्तिशाली

» यहाँ स्वतः होती है मन को शांति की अनुभूति

दादी हृदयमोहिनी बनीं संस्थान की मुख्य प्रशासिका

शांतिवन। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के अव्यक्तारोहण के पश्चात् 94 वर्षीय दादी हृदयमोहिनी को संस्थान की मुख्य प्रशासिका नवनियुक्त किया गया है। दादी हृदयमोहिनी बाल्यकाल से ही इस संस्थान से जुड़कर देश तथा विदेश में आध्यात्मिक एवं मानवता की सेवा कर रही हैं। इसके पूर्व दादी अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्यरत थीं। अब उन्हें मुख्य प्रशासिका का कार्यभार सौंपा गया है।

दादी रतनमोहिनी को संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका के रूप में नवनियुक्त किया गया है। पूर्व में दादी सह-प्रशासिका के रूप में कार्य कर रही थीं। दादी संस्था की अन्य आध्यात्मिक गतिविधियों को शुरू से ही सक्रिय रूप से देखती रही हैं। मुख्य रूप से संस्थान के समर्पित टीचर भाई-बहनों का सर्वांगीण विकास करने हेतु अपना अमूल्य समय देती रही हैं।

दादी पूर्णशांता को सह-प्रशासिका के रूप में नवनियुक्त किया गया है। वे भी बचपन से ही इस संस्थान में आंतरिक प्रशासनिक कार्य को देखती रही हैं। वे ज्ञान और योग की अनुभूतियों की खान हैं। अब वे संस्थान को सह-प्रशासिका के रूप में अपनी बहुमूल्य सेवायें प्रदान करेंगी।

परमात्मा द्वारा सिखाया गया राजयोग मेडिटेशन ही जीवन जीने की श्रेष्ठ कला

जूनागढ़-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जोषीपरा, सिंधी सोसायटी में आयोजित 'संगीतमय सम्पूर्ण स्वास्थ्य योग शिविर' में तन के साथ मन को स्वस्थ रखने का सहज मार्ग बताते हुए ब्र.कु. संजय,दिल्ली ने कहा कि वर्तमान समय चारो ओर तनाव, भय, चिन्ता, डिप्रेशन फैलता जा रहा है, ऐसे में तन-मन को सम्पूर्ण स्वस्थ रखने के लिए रोज़ व्यायाम के साथ आध्यात्मिकता और सद्गुणों को जीवन का एक हिस्सा बनाना पड़ेगा। खुशी, श्रेष्ठ संकल्प और मेडिटेशन बीमारी को दूर करने की सर्वोत्तम दवा है। उन्होंने संगीत के ताल के साथ एक्सरसाइज़ और एक्यूप्रेशर कराके सभी को हल्का कर दिया। इस अवसर पर ब्र.कु. दमयंती दीदी, ब्र.कु. बीना बहन तथा ब्र.कु.धरती बहन ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि परमात्मा द्वारा सिखाया गया राजयोग मेडिटेशन ही जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। इसे जीवन का एक हिस्सा बना दो, तो जीवन खुशनसीब, तनाव मुक्त बन जाएगा। साइलेन्स की शक्ति दुनिया की सर्वश्रेष्ठ-सर्वोच्च शक्ति है जो किसी भी समस्या वा मुश्किल में सहज पार करा देती है। इसके साथ ही उपस्थित जनसमूह को योग कॉमेन्ट्री द्वारा गहन शान्ति-शक्ति का अनुभव कराया गया।

महिला दिवस पर महिला संगोष्ठी

धमतरी-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर दिव्यधाम सेवाकेन्द्र में 'संस्कार, स्वास्थ्य और स्वच्छता की रक्षक - नारी' विषय पर आयोजित महिला संगोष्ठी में ब्र.कु. सरिता,निदेशिका,धमतरी ने कहा कि सृष्टि की रचना में ईश्वर ने नारी को रचना और पालना करने वाली माँ का स्थान दिया है जो और किसी को नहीं दिया। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता हमें आंतरिक स्वच्छता और सुन्दरता प्रदान करता है तथा हमें अपनी ज़िम्मेवारियों को पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी से करने की उर्जा प्रदान करता है। ब्र.कु. सरस,सेवाकेन्द्र संचालिका ने कहा कि आज शारीरिक श्रृंगार पर ही सारा ध्यान होने के कारण और पद- प्रतिष्ठा की लालाच, कम्पीटीशन और कम्पैरिज़न की दौड़ में नारी का आंतरिक सौन्दर्य खो गया है। वर्तमान समय समाज के सामने कन्या भ्रूण हत्या रोकना सबसे बड़ी चुनौती है जिसके लिए हम सभी को संगठित रूप से प्रयास करना होगा। श्रीमती गुंजा साहू,अध्यक्ष जनपद पंचायत ने कहा कि हमें पूर्ण स्वच्छता, ईमानदारी, और साहस के साथ अपना कर्म करते रहना चाहिए।

श्रीमती संगीता अग्रवाल,योग एवं संगीत प्रशिक्षक ने कहा कि नारी को अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए किसी बड़े मंच,बड़े संगठन अथवा शासन के सहारे की ज़रूरत नहीं है। प्रत्येक नारी अपने घर परिवार से ही नारी सशक्तिकरण की शुरुआत कर सकती है। सुशीला तिवारी, पार्षद,विवेकानंद वार्ड ने कहा कि प्राचीन काल से ही नारी सशक्त है, जिसका उल्लेख वेद-पुराणों में भी है। जहां नारी की पूजा होती है वह स्थान स्वर्ग है, यह बात पुरानी है लेकिन आज भी उतनी ही सत्य और प्रामाणिक है। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. जागृति ने किया। ब्र.कु. नवनीता ने नारी सम्मान में गीत प्रस्तुत किया।

बेहतर विश्व के नव निर्माण हेतु मातृ शक्ति का सम्मान

पानीपत-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ज्ञान मानसरोवर परिसर के दादी चंद्रमणि यूनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम में "महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन" विषय पर आयोजित विशाल कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती,यूरोप स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ने कहा कि आज का मनुष्य मंदिरों में तो देवियों की पूजा करता है लेकिन घर में रहने वाली मात-शक्ति जो भगवान ने देवियों के रूप में हमारे घरों में दी है उनका सम्मान नहीं करता है। उन्होंने कहा कि एक बेहतर विश्व के नव निर्माण के लिए हमें मातृ-शक्ति को आगे रखना होगा और उनका सम्मान करना होगा। महेंद्र सिंघी,चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर,डालमिआ भारत सीमेंट ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने इस धरती पर स्वर्ग का जो सपना देखा था वह कहीं न कहीं साकार होता नज़र आ रहा है। करनाल के सांसद संजय भाटिया की धर्मपत्नी अंजू भाटिया ने वन्दे मातरम कह करके मातृ शक्ति की वंदना की। राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण,निदेशक, ज्ञान मानसरोवर ने कहा कि एक पुरुष भी धन की प्राप्ति के लिए माँ लक्ष्मी, बल की प्राप्ति के लिए माँ दुर्गा, विद्या की प्राप्ति के लिए माँ सरस्वती की ही आराधना करता है। इसलिए नारी शक्ति महान है और हमें सदैव उसका सम्मान करना चाहिए। ब्र.कु. चार्ली,राष्ट्रीय संयोजक, ब्रह्माकुमारीज़ ऑस्ट्रेलिया ने अपनी शुभकामनाएं प्रदान की तथा ब्र.कु. जैस्मिन,लंदन ने ब्रह्माकुमारीज़ में आने के बाद का अनुभव सुनाया। राजयोगिनी ब्र.कु. सरला,सर्कल इंचार्ज ने सभी को शुभकामनायें देते हुए राजयोग का अभ्यास कराया। ब्र.कु. सुनीता ने कुशल मंच संचालन किया।

अंत में सभी ने बृज पुष्पा दादी की स्मृति में बने 3डी फिल्म शो सेमिनार हॉल का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में महेंद्र सिघी की धर्मपत्नी चंदा सिंघी सहित 1500 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया।

RNI NO RAJHN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 12th April 2020
प्रकाशक एवं संपादक : गंगाधर नरसिंघानी, सह-संपादक : ब्र.कु. अनुज, डी.बी. प्रिंट कॉर्प. जयपुर से मुद्रित एवं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org
कार्यालय : ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन, आबू रोड, (राज.) - 307510